टगर

विष्णु प्रभाकर

पात्र—प्रवेश-क्रम से

ठाकुर (आयु ५० ५१ वर्ष)
टगर (आयु २५-२६ वर्ष)
माथुर (आयु ३० वर्ष)
रस्तोगी (आयु ३० वर्ष)
डॉक्टर (आयु ४० वर्ष)
विमला (आयु ३५ वर्ष)
मेजर पुरी (आयु ३० वर्ष)
ठेकेदार गहलोत (आयु ४० ४५ वर्ष)
ठेकेदार गुप्ता (आयु ३० ३५ वर्ष)
नाजिम (आयु ३० वर्ष)
शेखर (आयु ३० वर्ष)
माधुरी (आयु २० वर्ष)
सरदार बरियामसिंह (आयु ७० वर्ष)

टगर

शरद जोशी

प्रथम अंक

समय छठा सातवां दशक

स्थान सीमा के समीप एक राजस्थानी कस्बा

[प्रथम श्रेणी के एक अधिकारी का कमरा। एक ओर ताश खेलने की मेज है, दूसरी ओर एक पलंग है जिस पर लेटे हुए ठाकुर साहब अखबार पढ़ रहे हैं। शक्ल सूरत और वेशभूषा से वह रसिक जान पड़ते हैं। पर्दा उठने पर दाहिनी ओर के द्वार से टगर प्रवेश करती है। यह द्वार अन्दर की ओर जाता है। अत्यन्त सुन्दर न होकर भी वेशभूषा से अत्यन्त मोहक आकर्षण पैदा हो गया है या कर लिया गया है। इस समय वह स्नान करके लौट रही है। उसकी मुक्त केशराशि पीठ पर फैली हुई है और आगे के केश मस्तक को घेरते हुए कानों को ढककर कंधे पर बिखर गये हैं। हाथ में जवाकुसुम की शीशी है। वह बायीं ओर को ठाकुर साहब की ओर जाती है। उसी क्षण बायीं ओर के द्वार से, जो बाहर से आता है माथुर साहब वहां प्रवेश करते हैं। पी० डब्ल्यू०डी० के सब डिवीजनल आफिसर हैं। यद्यपि वे इसीलिए आये हैं, परन्तु टगर को देखकर वह झिझकने का नाटक करते हैं। टगर शरारत से मुसकरा पड़ती है और बालों को झटका देकर कहती है।]

टगर आइए-आइए, माथुर साहब !

माथुर माफ कीजिए, मुझे मालूम नही था, बिना कहे ।

[ठाकुर अखबार हटाकर देखते हैं ।]

टगर तो फिर क्या हुआ ? न न झिझकिए नही। यहा बैठिए ।

[टेबल के पास वाली कुर्सी की ओर इशारा करती है और स्वय ठाकुर साहब के पास पलग पर बैठ जाती है । माथुर अभी वहीं खड़े हैं। ठाकुर अखबार रख देते हैं ।]

ठाकुर माथुर साहब, आप अभी खड़े ही हैं। विश्वास रखिए, हम झूठे शिष्टाचार मे विश्वास नही रखते, इसलिए डरिये नही, निश्चिन्त होकर बैठ जाइये।

माथुर जी, जी हां। इस छोटे-से कस्बे मे शिष्टाचार की जरूरत भी क्या है ? (कहते-कहते मेज के पास आते हैं।)

टगर (हँसते हुए) इसीलिए मैं समझती हूँ, आप बुरा न मानेंगे यदि मैं ठाकुर साहब के सिर मे जरा तेल मल दू। तब तक आपसे बातें भी करती रहूँगी। अच्छा ही हुआ कि आप आ गये। नही तो इनकी वे ही घिसी पिटी प्रेम की बातें सुनने को मिलती जो इन्होंने लोक-गीत इकट्ठे करते-करते याद कर ली हैं। (ठाकुर की ओर देखकर मुसकराती है।) मैं कुछ गलत कह रही हू क्या ?

ठाकुर तुम कभी गलत नही कह सकती। (माथुर को देखकर जो अभी तक खड़े टगर को देखने का प्रयत्न कर रहे हैं।) माथुर साहब, आप तो अभी वैसे ही खड़े हैं। अरे जनाब, इतना झिझकते क्या हैं ? माना कि अभी

हमारा बाकायदा विवाह नही हुआ है और टगर अभी भी मेरी सेक्रेटरी ही है, लेकिन हृदय का मिलन तो पूर्ण हो चुका है। और विवाह क्या है, दो हृदयो का मिलन। वह नही है तो सप्तपदी भी व्यर्थ है। इसलिए डरने की जरूरत नही है। आराम से बैठिये।

[टगर मुसक्राकर प्याली मे तेल निकालती है और माथुर की ओर देखती है। दृष्टि मिल जाती है। माथुर एकदम बठ जाता है।]

माथुर जी नही, जी नही। डरने की कोई बात नही है और मैं डरता भी नही हूँ। मैं तो यही कहता था, फिर आ सकता हूँ।

ठाकुर फिर तो आयेंगे ही लेकिन अब जो आये ह तो वापस जायेंगे क्या ? (टगर तेल मलने लगती है लेकिन देखती माथुर की ओर ही है।) अरे साहब, यह सब बुरजुवाई शिष्टाचार है। माना मैं ठाकुर हूँ पर इन बातो मे मेरा जरा भी विश्वास नही है। क्यो टगर, मै झूठ कह रहा हूँ ? हमको कितना नाटक करना पड़ता है यह बताने के लिए कि बहुत जल्दी सचमुच ही हमारा विवाह होने वाला है। नही तो दुनिया यही समझती है कि मैं टगर को कही से भगा लाया हूँ। सेक्रेटरी होने का तो एक बहाना है। यह युवती है और मैं बूढा बैल। (जोर से हँस पड़ता है।)

[टगर भी हँसती है। माथुर पहले तो एकाएक हँसता है फिर मुसक्राकर

टगर इसमें झूठ क्या है ? तुम भगा ही तो लाये हो। मेरी आयु की नारी क्या मन से तुम्हारे जैसे खूसट के साथ विवाह करेगी ?

[ठाकुर सहसा टगर के दोनो हाथों को लेकर दबा देता है।]

ठाकुर तुम ठीक कहती हो, टगर। मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है। लेकिन एक बात बताओ, क्या तुम मुझसे असन्तुष्ट हो ? होती तो क्या इस तरह मेरे साथ भागी भागी फिरती ?

[टगर माथुर की ओर भय भरी दृष्टि से देखती है।]

टगर साथ साथ भागे फिरने में मुझे बहुत बडा लालच है। न जाने कहा मन का मीत मिल जाये और मैं तुम्हे छोडकर उसके साथ हो लू।

ठाकुर काश टगर, तुम भाग सकती। पर मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा नहीं कर सकती।

टगर (प्यार से ठाकुर की ओर देखती है।) तुम्हे छोडकर जो भाग सकेगा वह सचमुच ही साहसी होगा।

[अल्प विराम। टगर इस बीच फिर से ठाकुर साहब के सिर मे तेल लगाने लगती है। और वह दूसरा हाथ मुह पर रखे लेटे रहते हैं। टगर माथुर साहब को ओर देखती है, देखती रहती है। माथुर बरबस मुख पर मुस्कान चिपकाए निःस्पन्दने का नाटक करते हैं। बसे टगर के दामन से उन्हें सुख मिलता है। वह सहसा उठने की चेष्टा करते हैं। तभी टगर

बोल उठती है।]

टगर माथुर साहब, आपको बडा अजीब सा लग रहा होगा। असल मे जब हम दोनो का प्रेमालाप आरम्भ होता है तो हम भीड मे भी यह भूल जाते है कि यहा हमारे अतिरिक्त और कोई भी है।

माथुर (उठता है।) जी नही, कोई बात नही। मैं तो बस, रात का भुगतान करने आया हूँ। मुझे बहुत अफसोस हे कि उस समय मेरी जेब मे पूरे पैसे नही थे। यह लीजिये सौ रुपये। (बटुए मे से रुपये निकालता है।)

ठाकुर (टगर का हाथ हटाकर) आप भी माथुर साहब, बस यू ही हैं। अरे, पैसे जैसे आपके पास रहे वैसे मेरे पास रहे। लेकिन कुछ भी हो, खेलते आप अच्छा ह। और सुना है, हारते भी कभी कभार ही है।

टगर (एकदम) अरे, तुम इतना भी नही जानते। रात तो ये जान बूझकर हारे थे।

ठाकुर सो किसलिए ?

टगर मेरे लिए, और किसके लिए ? (जोर से हॅस पडती है।)

[माथुर परेशान होता है जसे सहम गया हो।]

ठाकुर (हॅसते हुए) तुम ठीक कहती हो। तुम्हारे रहते कोई भी जीतने की इच्छा नही रखता क्योंकि तुम्हे हार कर ही जीता जा सकता है। वास्तव मे नारी को हारकर ही जीता जाता है। लेकिन भाई, मुझे तो डाक्टर साहब पर तरस आता है। बेचारे पत्नी से कितना डरते हैं।

टगर हर भला पति अपनी पत्नी से डरता है।

ठाकुर तुम्हारा मतलब है कि शादी के बाद मुझे भी तुमसे डरना होगा ?

टगर जैसे अब नहीं डरते !

माथुर (सहसा) क्षमा कीजिये, मुझे जाना है। यह रुपये सम्हाल लीजिये।

[आगे बढ़कर रुपये ठाकुर को दे देता है।]

ठाकुर (रुपये लेकर) न-न, जाइये नहीं। कई दोस्त आ रहे हैं। लोकगीतों का विशेष प्रोग्राम है। कुछ और भी प्रबन्ध है।

माथुर (आगे बढ़कर) माफ कीजिये, मैं फिर आऊँगा। वहाँ भी बहुत लोग बैठे हुए हैं। रुपये देने के साथ-साथ मैं आपको आमन्त्रित करने भी आया था। आइयेगा तो खुशी होगी।

टगर (उठती है।) मेरे मुँह की बात छीन ली आपने। लाज रह गयी।

[दोनों एकदम पास—जैसे सटकर खड़े हो गये हैं। ठाकुर देखते हैं।]

ठाकुर लाज-बाज में हम साहित्यिक लोगों का बहुत विश्वास नहीं है। टगर तो आने को तड़प रही थी। अवश्य आयेंगे। आज वहीं सत्संग होगा। सब प्रबन्ध है न ?

माथुर जी हाँ, उसके बिना भी कहीं ?

[उसी समय सहसा अन्दर से ज़ोर ज़ोर से बोलने की आवाज़ आती है। सहसा सब उसी ओर मुड़ते हैं।]

आवाज़ (बोलकर) क्या वे अभी तक यहीं हैं ? मैं उनको जान

के लिए कह गया था। उन्हे कल ही यह बगला छोड देना था। यह भीड, यह शगल, ताश, पीना पिलाना—यह सब मै नही सह सकता, नही सह सकता उन्हे-जाना होगा ।ऐं ! मेरा मुह क्या देख रहे हो ? उन्हें जाकर साफ-साफ कह दो कि आज हमारे मेहमान आ रहे हैं। उन्हे जाना होगा ।

[आवाज जसे दूर जाती है और उस पर ठाकुर साहब का स्वर सुपर-इम्पोज होता है।]

ठाकुर मालूम होता है, नाजिम साहब लौट आये है। लेकिन वे इतनी ज़ोर-ज़ोर से क्यो बोल रहे हैं ?

टगर इसलिए कि हम सुन सकें।

माथुर लेकिन यह सब है क्या ?

ठाकुर अजी, कुछ नही, हमको उनके घर ठहरे कई दिन हो गये हैं। वे जाब्ते के आदमी है, उस पर सरकारी अधिकारी ठहरे।

टगर और हम ठहरे साहित्यिक। न नियम मानते हे, न कानून से वास्ता रखते है।

माथुर आप साहित्यिक हैं, लेकिन क्रिमिनल तो नही है।

टगर (हँसकर) क्रिमिनल, अनजाने ही आपने यह क्या कह दिया ! साहित्यिक एक तरह का क्रिमिनल ही होता है। बस, थोडा-सा सुधरा हुआ।

ठाकुर (धीरे से) कोई आ रहा है।

[दूसरे ही क्षण नाजिम साहबका पी०ए० रस्तोगी प्रवेश करता है।]

रस्तोगी माफ कीजिये, ठाकुर साहब, नाजिम साहब ने पूछा है

ठाकुर तुम्हार मतलब है कि शादी के बाद मुझे भी तुमसे डरना होगा ?

टगर जैसे अब नही डरते ।

माथुर (सहसा) क्षमा कीजिये, मुझे जाना है। यह रुपये सम्हाल लीजिये ।

[आगे बढ़कर रुपये ठाकुर को दे देता है।]

ठाकुर (रुपये लेकर) न-न, जाइये नही । कई दोस्त आ रहे हैं। लोकगीतो का विशेष प्रोग्राम है। कुछ और भी प्रबन्ध है।

माथुर (आगे बढ़कर) माफ कीजिये, मैं फिर आऊँगा। वहाँ भी बहुत लोग बैठे हुए हैं। रुपये देने के साथ-साथ मैं आपको आमन्त्रित करने भी आया था। आइयेगा तो खुशी होगी।

टगर (उठती है।) मेरे मुँह की बात छीन ली आपने। लाज रह गयी।

[दोनो एकदम पास—जसे सटकर खड़े हो गये हैं। ठाकुर देखते हैं।]

ठाकुर लाज-वाज मे हम साहित्यिक लोगो का बहुत विश्वास नही है। टगर तो आने को तड़प रही थी। अवश्य आयेंगे। आज वहीं सत्संग होगा। सब प्रबन्ध है न ?

माथुर जी हाँ उसके बिना भी कहीं ?

[उसी समय सहसा अन्दर से जोर जोर से बोलने की आवाज आती है। सहसा सब उसी ओर मुड़ते हैं।]

आवाज (चीखकर) क्या वे अभी तक यही हैं ? मैं उनको जाने

के लिए कह गया था। उन्हे कल ही यह बगला छोड देना था। यह भीड, यह शगल, ताश, पीना पिलाना—यह सब मै नही सह सकता, नही सह सकता उन्हें-जाना होगा ।ऐं ! मेरा मुह क्या देख रहे हो ? उन्हें जाकर साफ-साफ कह दो कि आज हमारे मेहमान आ रहे हैं। उन्हे जाना होगा ।

[आवाज जैसे दूर जाती है और उस पर ठाकुर साहब का स्वर सुपर-इम्पोज होता है।]

ठाकुर मालूम होता है, नाजिम साहब लौट आये है। लेकिन वे इतनी जोर-जोर से क्यो बोल रहे है ?

टगर इसलिए कि हम सुन सके।

माथुर लेकिन यह सब है क्या ?

ठाकुर अजी, कुछ नही, हमको उनके घर ठहरे कई दिन हो गये है। वे जाब्ते के आदमी है, उस पर सरकारी अधिकारी ठहरे।

टगर और हम ठहरे साहित्यिक। न नियम मानते है, न कानून से वास्ता रखते है।

माथुर आप साहित्यिक हैं, लेकिन क्रिमिनल तो नही है।

टगर (हँसकर) क्रिमिनल, अनजाने ही आपने यह क्या कह दिया ! साहित्यिक एक तरह का क्रिमिनल ही होता है। बस, थोडा सा सुधरा हुआ।

ठाकुर (धीरे से) कोई आ रहा है।

[दूसरे ही क्षण नाजिम साहबका पी०ए० रस्तोगी प्रवेश करता है।]

रस्तोगी माफ कीजिये, ठाकुर साहब, नाजिम साहब ने पूछा है

ठाकुर नाजिम साहब ने पूछा है कि हमे आज उनका यह बँगला छोड देना था पर छोडा नही। क्यो ?

रस्तोगी जी हा, उन्हे बहुत दुख है कि उनके

टगर कुछ मेहमान आ रहे है। आप उनसे जाकर कह सकते है कि कल हम यह बँगला छोड दगे। असल मे हमे यहा आना ही नही चाहिए था। पर ठाकुर साहब हठ करते रह कि नाजिम साहब साहित्य रसिक ह। नाजिम साहब मेरे जिगरी दोस्त के बेटे है। नाजिम साहब को मैंने गोद खिलाया है, नाजिम साहब यह हैं, नाजिम साहब वह है।

[टगर भूल जाती है कि रस्तोगी वहीं खडा है। वातावरण म एक अजीब सी व्याकुलता पदा हो जाती है। रस्तोगी सिर झुकाकर लौट जाना चाहता है। तभी ठाकुर बोल उठते हैं।]

ठाकुर ठहरो, तुम नाजिम साहब से कह दो कि हम अभी जा रह है। इतने दिन रहे उसके लिए कृतज्ञ है।

रस्तोगी जी, कह दूगा। (चला जाता है।)

[माथुर उत्तेजित होते हैं।]

माथुर यह तो अन्याय है, सरासर अन्याय।

ठाकुर आपके लिए हो सकता है, पर उनके अपने सिद्धान्त हैं।

माथुर खाक सिद्धान्त ह! मैं भी राज्य का एक पजीकृत अधिकारी हूँ।

ठाकुर जाने दीजिये इस बात को। चलो टगर, हम लोग रेलवे के वेटिंग-रूम मे चलते है।

माथुर नहीं, यह नहीं हो सकता। आप वेटिंग रूम मे नही

जा मकते। मेरा घर है। जब तक चाहे तब तक रहिये। देखता हूँ, नाजिम साहब मेरा क्या बिगाड लेते हे ?

टगर (मुसकराकर) न-न, ऐसा न कीजिये। हम नही चाहते कि हमारे कारण यहा बदअमनी फैले। छोटा मा कस्बा है। जरा-सी देर मे सब लोग सब-कुछ जान जाते है। हम लोग ठहरे घुमक्कड, हमारे लिए नीचे धरती, ऊपर आकाश।

माथुर मैं जानता हूँ, आपको और कही जाने की जरूरत नही होगी। अगर कभी भी घर छोडने को कहूँ तो ।

ठाकुर (टगर से) मैने कहा था न टगर, कि तुम-सी नारी साथ मे हो तो किसमे हिम्मत है कि अपने घर मे ठहरने को जगह न दे ?

टगर कम से कम नाजिम साहब ने तो नहीं दी।

ठाकुर अरे, वह कोई इसान है। वह तो शासक है। अच्छा माथुर साहब, हम लोग अभी सामान बटोर लेते है। बहुत थाडा सामान है। खानाबदोश जो ठहरे। क्यों, टगर ?

टगर जी हाँ मेरे पास तो केवल शृगार का सामान है और है जवाकुसुम की शीशी। बूढे बालुम को रिझाने के लिए इतना काफी है। नही है क्या ? (सब हँस पडते हैं।)

ठाकुर बडी दुष्ट हो !

टगर लेकिन झूठी नही।

माथुर (हँसता हुआ) आप न दुष्ट हैं, न झूठी। आप तो सरलप्राण नारी है। अच्छा, मैं अभी कार लेकर

आता हूँ।

[वह तेजी से बाहर चला जाता है। ठाकुर और टगर एक क्षण उसे जाते देखते हैं। फिर ठाकुर अन्दर की ओर मुड जाते हैं। टगर एक क्षण एकाकी मुसकराती है, फिर हँस पडती है।]

टगर हर आदमी शिकारी बनना चाहता है। पर वह यह नही जानता कि उसी क्षण से वह स्वय शिकार बन जाता है।

[वह भी अन्दर चली जाती है। मच पर प्रकाश धुधलाने लगता है। एक क्षण मे गहरा अधकार छा जाता है। छाया रहता है। दुबारा जब प्रकाश होता है तो एक सप्ताह बीत चुका है। कमरा मायर साहब का है। लगभग नाजिम साहब के कमरे जसा ही है। सामने दो खिडकियाँ हैं, जिनसे बाहर सडक दिखायी देती है। उससे पहले छोटी सी फुलवारी है। कमरे मे अन्दर इधर उधर मेजे हैं, आराम कुर्सी भी है। बीचोंबीच ताश खेलने की मेज है। प्रकाश होन पर वहा ताश की बाजी जमी हुई है। ठाकुर और मायुर साहब के अतिरिक्त सिविल अस्पताल के डॉक्टर भी वहाँ उपस्थित हैं। सभी लोग जोर जोर से हँस रहे हैं। सहसा डॉक्टर जोर से बोल उठता है।)

डॉक्टर (पत्ता दबाकर) लाइये, पत्ते दिखाइये।

ठाकुर (पत्ते फेंककर) तो इसका मतलब है इस बार भी डॉक्टर जीते। लेकिन भाई, मैं उनको बधाई नहीं दूंगा।

डाक्टर क्यों साहब, क्या नहीं देंगे ?

ठाकुर क्योंकि जीतने वाला वास्तव में हारता है। जानते है, क्या ? क्योंकि वह किसी के दिल में ईर्ष्या पैदा कर देता है और ईर्ष्या सब गुणों की शत्रु है। जो कुछ अच्छा है उसको वह लील जाती है।

[दोनों पत्ते फेंककर ठाकुर की ओर देखने लगते हैं।]

डॉक्टर बात तो आप ठीक कहते है। हम तो सोच भी नहीं सकते कि हारने में भी सुख होता है।

माथुर अफसोस डॉक्टर, आपने हारकर कभी देखा ही नहीं। हारने में बहुत सुख होता है। लेकिन प्रेम की दुनिया में।

ठाकुर (पत्ते समेटते हुए) वही, वही तो मैंने यह सबक सीखा है। इस संसार में प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है। और जो प्रेम में सत्य है वह हर कहीं सत्य है। टगर से पूछना

[उसी समय अन्दर से टगर प्रवेश करती है। वह स्नान करके लौट रही है। ऐसा लगता है जैसे किसी चित्रकार ने वर्षा की सन्ध्या को रूप दिया हो। वही धुला हुआ लावण्य, वही सौंधी सौंधी गंध। सबकी दृष्टि उस पर जाकर अटक जाती है। दो क्षण अटकी रहती है। फिर ठाकुर ही बोलते हैं।]

ठाकुर लो, टगर का नाम लिया और वह आ गयी। बड़ी उम्र है तुम्हारी, टगर! वैसे थिंक ऑफ दि डैवल एण्ड ही इज देअर, यह भी कहते हैं। (हँसते हैं।) और, और तुम हो भी शैतान। (प्यार से) लेकिन, टगर, इस समय तुमने जूड़ा क्यों बाँधा है? अपने लम्बे केशों को मुक्त लहराने दो। सान्ध्य गगन में पूनम के चन्दा-सा तुम्हारा मुख त्रिपुण्डाकार बिन्दी से कैसा मादक हो उठता है, यह मैं ही जानता हूँ। (टगर मेज के पास जाती है।)

टगर (मुसकराती हुई) क्या है जो आप नहीं जानते? ज्यों ज्यों उम्र बढ़ती है त्यों त्यों परख भी बढ़ती है।

[माथुर उठकर एक बार टगर के पास वाली खिड़की से बाहर देखते हैं। फिर टगर की ओर देखते हैं।]

ठाकुर तभी तो प्रेम का रहस्य जानने वाली नारियाँ प्रौढ़ पति को चुनती हैं। (हँसते हैं।) मैंने कुछ गलत कहा है, माथुर साहब? टगर से ही पूछ लीजिये।

डॉक्टर पूछने की क्या जरूरत है, हम देख जो रहे हैं।

माथुर जी हाँ, हाथ कंगन को आरसी क्या?

[दोनों एक दूसरे को देखकर मुसकराते हैं।]

ठाकुर शुक्रिया, शुक्रिया! (टगर से) टगर, तुम्हारे साथ एक हफ्ता रहकर ये लोग भी प्रेम के मामले में समझदार हो गये हैं।

टगर (खिलखिलाकर) तब तो इनसे डरना होगा। कुछ दिन और रह गयी तो कोई-न-कोई मुझे भगा ले जायेगा।

ठाकुर लो टगर का नाम लिया और वह आ गयी। बड़ी उम्र है तुम्हारी, टगर! वैसे थिंक ऑफ दि डैवल एण्ड ही इज देअर, यह भी कहते हैं। (हँसते हैं।) और, और तुम हो भी शैतान। (प्यार से) लेकिन, टगर, इस समय तुमने जूड़ा क्यों बाँधा है? अपने लम्बे केशों को मुक्त लहराने दो। सांध्य गगन में पूनम के चन्दा-सा तुम्हारा मुख त्रिपुण्डाकार बिन्दी से कैसा मादक हो उठता है, यह मैं ही जानता हूँ। (टगर मेज के पास जाती है।)

टगर (मुसकराती हुई) क्या है जो आप नहीं जानते? ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है त्यों त्यों परख भी बढ़ती है।

[माथुर उठकर एक बार टगर के पास वाली खिड़की से बाहर देखते हैं। फिर टगर की ओर देखते हैं।]

ठाकुर तभी तो प्रेम का रहस्य जानने वाली नारियाँ प्रौढ़ पति को चुनती हैं। (हँसते हैं।) मैंने कुछ गलत कहा है, माथुर साहब? टगर से ही पूछ लीजिये।

डॉक्टर पूछने की क्या जरूरत है, हम देख जो रहे हैं।

माथुर जी हाँ, हाथ कंगन को आरसी क्या?

[दोनों एक दूसरे को देखकर मुसकराते हैं।]

ठाकुर शुक्रिया, शुक्रिया! (टगर से) टगर, तुम्हारे साथ एक हफ्ता रहकर ये लोग भी प्रेम के मामले में समझदार हो गये हैं।

टगर (खिलखिलाकर) तब तो इनसे डरना होगा। कुछ दिन और रह गयी तो कोई-न-कोई मुझे भगा ले जायेगा।

ठाकुर (अट्टहास) इसकी मुझे चिन्ता नही है। मैंने तुम्हे बाधा थोडे ही है। जिस क्षण जाना चाहोगी, जा सकोगी।

टगर तभी तो नही जा पाती। तुमने कही लक्ष्मण-रेखा ही नही खीची।

ठाकुर लक्ष्मण-रेखा खीचना स्मगलिग के लिए उत्तेजित करना है। रावण ने सीता को स्मगल ही तो किया था। छि-छि किस दुष्कम की याद आ गयी! न-न, इस बात की चर्चा करके इस मादक सध्या को धूमिल नहीं करूगा। चलो-चलो, घूमने चल। (उठता है। शप सब भी उठते है और खिडकियो के पास जा खडे होते है।) इस राजस्थानी नहर के किनारे-किनारे कितना सुरम्य दृश्य है। दूर क्षितिज तक फैले हुए खेत, बीच-बीच मे शान्त अलसाए गाव, प्रकृति की पलक जैसे बोझिल हो उठी हो। तब हृदय न जाने क्या चाहने लगता है। और हा, आज तुम मोतिया रग की साडी, और कानो मे चादी के कुण्डल पहनना। छि, सोना न जाने किस कुरुचि वाले व्यक्ति ने श्रृगार का साधन बना दिया!

टगर (हँसती है।) म अभी कपडे बदलकर आती हूँ। तब तक आप सोने की बुराइयो पर भाषण देते रहिये। ये लोग अच्छे श्रोता है। नाजिम साहब मे यही कमी थी। (जाने को मुडती है।)

ठाकुर (हसता हुआ) कहने को कुछ हो तो श्रोताओ की कमी नही होती। पर मेरी वास्तविक श्रोता तो तुम्ही हो, टगर, केवल तुम्ही।

[टगर एक बार ठाकुर की ओर देखकर

मुसकराती है फिर चली जाती है।]

डॉक्टर (पास आकर) आप सचमुच टगर को बहुत प्यार करते हैं।

माथुर (पास आकर) जी नही, प्यार नही, दुलार करते हैं।

ठाकुर (हसता है।) आपने सचमुच मर्म की बात कही है, माथुर साहब। आप तो जानते ही हैं कि बच्चा दुलार का भूखा है। और युवक प्यार का। और वृद्ध (हँसता है।) वह मैं स्वय जितना जानता हूँ उतना और कोई नही जानता। (डॉक्टर से) डॉक्टर साहब, वृद्ध चाहता है सत्कार और (हँसता है।) और नारी चाहती है सब कुछ—दुलार, प्यार और सत्कार। तभी वह सर्वात्म भाव से आत्म-समपण करती है।

डॉक्टर (चकित-सा) ठाकुर साहब, आप तो हर विषय के विशेषज्ञ हैं।

ठाकुर आपकी जर्रानवाजी है वरना मैं तो सिफ टगर को चाहता हू।

माथुर (उच्छ्वसित स्वर) और टगर आपको। काश!

ठाकुर (पास आकर) काश, आपको भी कोई टगर की तरह प्यार करता।

[सहसा टगर के सुरीले कण्ठ मे मीरा का भजन उभरता है। तीनों मूर्तिवत उसी ओर देखते हैं और सुनते हैं।]

टगर मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई, साधो, सकल लोक कोई।
भाई छोड्या, बन्धु छोड्या, छोड्या सगा सोई,
साधु सग बैठ बैठ लोक-लाज खोई।

भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई,
अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई। मेरे तो
दधि मथ घृत काढ लियो, डार दई छोई,
राणा विष को प्याला भेज्यो, पीय मगन होई।
अब तो बात फैल पडी, जाणे सब कोई,
मीरा एक लगण लागी होनी होय सो होई। मेरे तो

[गीत रुक जाता है फिर तीनों मंत्र मुग्ध से खड़े रहते हैं। सबसे पहले डॉक्टर भावाकुल होकर कहता है।]

डॉक्टर क्या मादक स्वर पाया है टगर ने!

माथुर और गीत भी क्या चुना है! पुराना होकर भी कितना नया है। कैसा दर्द है इसमें! वही जान सकता है जिसने सहा है।

ठाकुर (गम्भीर होकर) हाँ, माथुर साहब, यह गीत टगर के जीवन की दर्द-भरी कहानी का प्रतीक है। मैं जानता हूँ, क्यों वह प्रतिदिन इस गीत को गाती है? क्यों वह अपने प्राण इस गीत में उँडेल देती है? जितना मुक्त होकर वह हँसती है उतना ही उसने सहा है। आपके समाज ने उसका अपमान किया है। राणा उसी समाज का प्रतीक है। उसके हाथ से अपमान-रूपी विष का प्याला पीकर वह कैसी मगन हो गयी है। साधु-संगत में बैठ बैठकर यानी मेरे साथ घूम-घूमकर उसने लोक-लाज खो दी है। (बोलते बोलते वह खिड़की के पास पहुँच जाते हैं। टगर वहाँ आती है लेकिन वे उसे देख नहीं पाते।) उसके प्रेम की तन्मयता, उसका आत्म-समर्पण, वह जैसे मुझमें लीन हो गयी है। मैं ही उसका गिरधर गोपाल हूँ और वह है मेरी मीरा।

टगर (पास आते हुए) गिरधर गोपालजी, इस तरल सध्या को आप लम्बे-लम्बे भाषण देकर क्यो नष्ट कर रहे हैं ?

ठाकुर (टगर की ओर मुडकर) टगर, जब तुम गाती हो मेरा मस्तक आकाश को छूने लगता है। अहा ! यह सिंगापुरी साडी, यह सघन मुक्त केशराशि, ये नशीले कजरारे नयन, लगता है जसे प्रेमाकुला प्रकृति अभी स्नान करके आयी हो। छूते डर लगता है। साथ ही यह भी जी करता है कि इस केशराशि मे मुह छिपाकर सो जाऊँ।

टगर (शरारत से) फिर वही शब्द जाल !

ठाकुर न-न, नाराज न हो। यह रूप देखकर मन ललचा ही जाता है। इन सबका भी ललचा रहा होगा। *(सब परेशान होते हैं।) न-न, परेशान मत होइये। यह* स्वाभाविक है। इसके लिए अपने आपको देवताओ के पीछे छिपाना पाप है।

टगर बस-बस, रहने दो, इतने निदय न बनो।

माथुर (एकदम) न-न, श्रीमती ठाकुर।

टगर श्रीमती ठाकुर नही, टगर।

माथुर जी हा, टगर ! क्षमा कीजिये, ठाकुर साहब न कुछ गलत नही कहा है। आपको वह इतना प्यार करते है

टगर (शरारत से) इनकी बातो मे न जाना। बूढे है और बूढे व्यक्तियो का प्यार बातो मे ही सीमित हो जाता है। नही तो क्या बोल-बोलकर प्यार का प्रदशन किया जाता है !

– ठाकुर *श्रीमती जी, नारी किसी भी बात से नही पसीजती,*

हूँ, टगर भली है । क्योकि वह सॉवली है । लेकिन सुन लो, मै काली हूँ या गोरी, भली हूँ या बुरी, तुम मुझे छोड नही सकते । अब उठो और चलो ।

डॉक्टर (उठता है।) चलो बाबा, तुमसे मुक्ति दिलाने वाला अभी कोई पैदा नही हुआ ।

विमला और जब तक तुम जीवित हो, कोई होगा भी नहीं । यह भी जानती हूँ कि मेरे मरने तक तुम अवश्य जीवित रहोगे ।

[अट्टहास उठता है । दोनों चले जाते हैं और एक क्षण बाद मेजर पुरी वहा आते हैं ।]

माथुर (हँसते हँसते) आइये-आइये, मेजर साहब, आप ठीक समय पर आ गये ।

पुरी (पास आते हुए) जी हाँ, महफिल गुलज़ार है । ठाकुर साहब, एक तो यह नहर, दूसरे आप, दोनो ने मिल कर सचमुच ही इस रेगिस्तान मे जीवन उँडेल दिया है । म भी आपका साथ देने के लिए तडपता रहता हूँ । लेकिन ये स्मगलर, ये तस्कर व्यापारी ।

ठाकुर (बैठने का सकेत करते हैं।) ये देश के सबसे बडे शत्रु हैं । बैठिए-बैठिए । (पुकारकर) टगर, मेजर भी आये है । हाँ, मेजर साहब, मै कह रहा था कि किसी भी देश को बाहरी शत्रुओ से इतना डर नही होता जितना आस्तीन के सापो से । मेजर साहब, ये तस्कर नाग हैं नाग । लेकिन दु ख यही है कि ज्यो-ज्यो हमारी स्वतन्त्रता पुरानी होती जाती है त्यो-त्यो इनका व्यापार भी दृढ होता जाता है ।

[पुरी माथर के पास बैठ जाते हैं ।]

पुरी आप ठीक कहते है। हम जितनी प्रगति करते हैं, भ्रष्टाचार भी उतना ही आगे बढता है। बावजूद सब प्रयत्नो के हम उसे रोक नही पा रहे है।

ठाकुर (एकाएक तीव्र होकर) माफ कीजिये, प्रयत्न करता कौन है ? यदि सचमुच पयत्न किये जाये तो कुछ भी करना असम्भव नही है। पहरेदार की इच्छा के विरुद्ध चोर कभी चोरी नही कर सकता। म साफ बात कहने का आदी हूँ, आपका शत्रु नही हूँ। आप या तो गफलत करते है या रिश्वत लेते है। उसके बिना भ्रष्टाचार नही पनप सकता, कभी नही पनप सकता। (माथुर की ओर देखकर) क्यो म गलत कहता हूँ, माथुर साहब ?

माथुर मुझे क्षमा करेगे ठाकुर साहब, भ्रष्टाचार के बारे मे हम बढा-चढाकर बोलने के आदी हो गये है। भ्रष्टाचार कहाँ नही होता ? हमारा देश तो समृद्ध नही हुआ है, लेकिन जो देश समृद्धि की चरम सीमा पर पहुँच गये हैं वहाँ भी कम भ्रष्टाचार नही है।

ठाकुर (आवेश मे) आप यह कहते है ! आप भ्रष्टाचार को सही प्रमाणित करना चाहते है ?

माथुर जी नही, म सही प्रमाणित करना नही चाहता, मै तो केवल यह कहना चाहता हूँ

पुरी (हाथ से रोककर) ठाकुर साहब, मैं आपसे बहस नही करूँगा। केवल एक बात पूछना चाहूँगा—क्या आपने सीमा-प्रदेश देखा है ? उसका विस्तार आपकी दृष्टि मे है। स्थान-स्थान पर उनके गाव और हमारे खेत सीमा रेखा को छूते हुए चलते हैं। दोना

देशो के लोग सहज भाव से बातें करते हैं। इधर के पशु उधर, उधर के इधर चरने आते जाते ह।

ठाकुर (पूववत)वही लचर दलीलें, वही घिसे-पिटे प्राणहीन तक ! आप समझते ह कि आप मुझे विश्वास दिला सकते है ?

पुरी जो विश्वास करना नही चाहता उसे कौन विश्वास दिला सकता है, लेकिन यह आपका विषय नही है। आप गीत इकट्ठे कर सकते है, शासन नही कर सकते। आपको यदि सचमुच रुचि है तो ज़रा मेरे साथ चलने का कष्ट कीजिये।

ठाकुर (तेजी से उठकर) अभी चलिये, मैं प्रस्तुत हूँ।

पुरी (उठकर) तो आइये। मैं आपको बताऊँगा कि सीमा क्या होती है और तस्कर व्यापार कैसे पनपता है।

[दोनों द्वार की ओर बढ़त हैं। उसी क्षण टगर वहाँ प्रवेश करती है। पीछे पीछे एक लड़का है जिसके हाथ मे टे है। उसमे स्क्वेश और शराब है।]

माथुर अरे, आप तो सचमुच चल दिये ? रुकिये, साहब ! पहले कुछ पीजिये। सीमा कही भागी नही जाती।

ठाकुर लेकिन समय तो भागा जाता है। रुकना बात को टालना है। (टगर से) टगर, मैं पुरी साहब के साथ जा रहा हू, जल्दी नही लौट सका तो चिन्ता मत करना। क्षमा कीजिये, माथुर साहब, मेरे भीतर अग्नि दहकती रहती है। मै खुलेपन मे विश्वास करता हूँ। हर व्यक्ति का मुक्त और निद्वन्द्व देखना चाहता हूँ। जहा मुक्तता नही है, खुलापन नही है, वही भ्रष्टाचार है। आइये, मेजर साहब !

पुरी चलिये।

[दोनों तेजी से बाहर जाते हैं। मायुर हतप्रभ-से उन्हें देखते हैं। टगर जो अब तक मौन थी, मुसकराती है।]

माथुर (टगर को देखते हुए) यह उम्र, यह जीवट! ऐसे लगता है जैसे ठाकुर साहब अपराधियों को सामने पाकर गोली से उड़ा देंगे।

टगर वह कुछ भी कर सकते हैं। उन्हें भ्रष्टाचार से बेहद नफरत है।

माथुर लगता तो ऐसा ही है

[तभी सहसा हाथ में पत्र लिये विमला तेजी से यहा प्रवेश करती है।]

विमला (पुकारती है।) माथुर साहब, माथुर साहब! (पास आकर) टगर बहन, तुम्हारे ठाकुर साहब नही दिखायी देते? तुम्हारे बिना वह कैसे चले गये?

टगर अपने पैरों से चलकर गये हैं। आपने देखा ही होगा और यह भी सुन लिया होगा कि वह सीमा का निरीक्षण करने गये हैं।

विमला (कौतूहल से हँसकर) सीमा का निरीक्षण और ठाकुर साहब! समझी, उन्हें लोकगीत इकट्ठे करने होंगे।

टगर मैं क्या जानूं? मैं तो घूमने के लिए तैयार बैठी हूँ। वे नही हैं तो आप ही चलिये।

विमला क्षमा करो, बहन! यह मादक शृंगार, यह मोहिनी रूप पुरुष के साथ ही शोभा देता है। ठाकुर साहब नहीं हैं। तो आप माथुर साहब के साथ जा सकती हैं। इन्हें भी घूमने का बहुत शौक है। (शरारत से) विशेषकर सुंदरी नारी के साथ।

माथुर (क्रुद्ध होकर) डॉक्टरनी साहिबा, कभी-कभी आप भूल जाती है कि आप क्या कह रही है।

विमला मुझे अफसोस है, लेकिन मैं विवश हू। आपकी पत्नी की चिट्ठी फिर आयी है। (चिट्ठी माथुर की ओर बढाती है। वह तनिक भी जुम्बिश नहीं करते।)

माथुर (चिढकर) तो मैं क्या करूँ ?

विमला जो आपके मन मे आये। मैं तो उसे आप तक पहुँचाने की जिम्मेदार थी। टगर बहन गवाह है, यह रखी है मेज़ पर। (मेज़ पर रखती है।) और मैने उन्हे भी लिख दिया है कि मुझे बीच मे न डाले। लेकिन एक बात आप भी याद रखिये कि इधर-उधर ताकने से तृष्णा बढती है। और जब तृष्णा !

माथुर (विमला पर क्रूर दृष्टि डालकर) डॉक्टरनी साहिबा, मेरे निजी मामलो मे पडने का आपको कोई अधिकार नही है।

विमला माथुर साहब ! पडोस के घर मे जब आग लगती है तो अपना घर भी सुरक्षित नही रहता। (व्यग्य से) मुझे आप लोगो के लक्षण भी बहुत शुभ नजर नही आते।

[शीघ्रता से चली जाती है और टगर बडे जोर से हँस पडती है।]

माथुर (तिलमिलाकर) ओह, ये लोग, ये मुझे मेरे हाल पर क्यो नही छोड देते ? क्यो तर्को की ढाल लेकर दिन-रात आक्रमण करते रहते हैं ?

टगर क्योकि आप उन आक्रमणो को स्वीकार कर लेते है। लेकिन खैर, छोडिए इन बातो को। कुछ पीजिएगा। (गिलास देती है।)

माथुर शुक्रिया। (गिलास ले लेता है।)

टगर अब बताइये, आप घूमने चलेंगे या ताश खेलेंगे? लेकिन हाँ, मुझे ठाकुर साहब की तरह हारना नहीं आता।

माथुर (हँसकर) नारी हारना जानती ही नहीं है। हारना जानता है पुरुष।

टगर (जोर से हँसकर) लेकिन किसी गहरी जीत की आशा में, जैसे ठाकुर साहब। मुझे भी तो ठाकुर साहब ने इसी तरह जीता था। लेकिन माथुर साहब, क्या आप यह नहीं मानेंगे कि यह भी एक तरह का तस्कर व्यापार है?

माथुर होगा, पर मैं तुम्हारे बारे में एक बात अक्सर सोचता रहा हूँ।

टगर क्या? (स्क्वेश पीती हुई माथुर के पास वाली कुर्सी पर बैठ जाती है।)

माथुर यही कि ठाकुर साहब उम्र में तुमसे बहुत बड़े हैं। क्या तुम सचमुच उनके साथ खुश हो?

टगर आपको क्या कुछ नाखुश दिखाई देती हूँ?

माथुर जो दिखाई देता है, वही क्या सही होता है?

टगर लेकिन ठाकुर साहब तो मानते हैं कि नारी केवल बातों से ही संतुष्ट रहती है।

माथुर क्या आज भी?

टगर (मुसकराकर) आज कुछ अधिक ही। मैं हूँ न! मेरे पिता ने मेरे लिए एक सुन्दर, स्वस्थ और साहित्यिक वर ढूंढा था। लेकिन मैं क्या उसे बाँधकर रख सकी? केवल इसी कारण न कि मुझे बातें करना नहीं आता था। और वह था एक महान लेखक।

माथुर महान लेखक ! क्या नाम है उनका ?

टगर नाम में क्या रखा है ! कुछ भी हो सकता है। वह चाहता था कि मैं भी उसकी तरह साहित्य की बातें करूँ। काफ्का, कामू और सार्त्र के दर्शन पर बहस करूँ। मुक्त व्यवहार करूँ। लेकिन प्रयत्न करने पर भी उस दिन नही कर पायी। चुपके चुपके उसके जीवन मे एक और नारी ने प्रवेश किया और हम दोनो के बीच मे खाई बढती गयी। एक दिन उसको पाटना मुश्किल हो गया।

माथुर फिर ?(बाजी बाटता है।)

टगर फिर क्या, मान सम्मान तो मेरा भी था। उसने मुझे घर छोडने को विवश कर दिया। मैं चली आयी और समय आने पर हम दोनो अलग हो गये।

माथुर (दर्द भरा स्वर) तो आप तलाक़शुदा हैं ?

टगर (पत्ते उठाकर) जी हां, न जाने मुझ पर क्या बीतती यदि ठाकुर साहब मुझे अपनी सेक्रेटरी बनाना स्वीकार करके उबार न लेते। मैं उनकी सेक्रेटरी बनकर आयी और अब पत्नी बनने वाली हूँ। वास्तव मे माथुर साहब ठाकुर साहब को मैंने ढूढ निकाला है।

माथुर आपने ! मैं तो समझा था कि ठाकुर साहब ने आपको खरीदा है।

टगर (पत्ते देखती हुई) एक न एक को तो खरीदना ही था। उन्होने नही तो मैंने खरीदा। मुझे इससे दो लाभ हुए, समझदार पति ही नही मिला, स्वतन्त्रता भी मिली। मैंने खूब साहित्य पढा—काफ्का, कामू

माथुर (बैठ जाता है।) जी हाँ, वह मुझसे मिलने आयी थी। उसने मुझसे प्राथना की थी कि मैं अपने पिता की बात न मानू। लेकिन आदश की बात नाटक मे चल सकती है, जीवन मे नही। मैं उसकी बात नही मान सका। और वह लडकी इतनी भावुक निकली कि उसने खुदकुशी कर ली।

टगर (हठात पत्ते फेंककर) खुदकुशी कर ली! बुजदिल कही की! खुदकुशी करने की क्या जरूरत थी? मेरी तरह अपने को बेच देती और दुहरा लाभ उठाती। नारी किसी न-किसी रूप मे बिकती ही है। रोज अखबारो मे देखते होंगे, हर इश्तिहार के साथ नारी का चित्र होता है—तेल हो, मजन हो, कपडे हो, जूते हो, मिठाई हो, घी हो—कुछ भी हो, नारी के मोहिनी रूप की रिश्वत दिये बिना वे नही बिकते। (हँसती है।)

माथुर (दद से) आह श्रीमती ठाकुर!

टगर श्रीमती ठाकुर नही, टगर।

माथुर जी हा, टगर। मैं नही जानता कि यह सब क्या हुआ। पर तब से मुझे शान्ति नही मिली है। पिता जी ने जो लडकी मेरे लिए चुनी

टगर चुनी नही, निश्चित की। हम शब्दो का सही प्रयोग करना नही जानते, तभी सब गडबड होती है। आप कहना चाहते है कि आपके पिताजी ने आपकी क़ीमत लेकर जो लडकी आपके गले मे बाध दी, उसे आप प्यार नही कर सके। कर भी कसे सकते थे? गले के ढोल को बजाकर शोर मचाया जा सकता है, प्यार का सगीत नही पदा किया जा

सकता।

माथुर यह भाषा मैं नही जानता। इतना ही जानता हूँ कि सब से भटक रहा हूँ। और लगता है जैसे कि सदा भटकता ही रहूँगा।

टगर (मुसकराकर) आप क्या कस्तूरी मृग है जो बराबर भटकते ही रहेंगे ? इधर देखिये, मेरी ओर

[माथुर सहसा दृष्टि उठाता है। टगर मादकता से मुसकराती है। एक क्षण माथुर उस दृष्टि मे उलझा ही रहता है जसे कहीं खो गया हो।]

माथुर नही जानता था टगर, तुम इतनी सुन्दर हो—साक्षात् रति जैसी।

टगर (निश्वास) मेरे पहले पति इससे भी कही अधिक प्रभावशाली शब्दो मे मेरे रूप का बखान किया करते थे। पर एक दिन आया, वही रूप उनके लिए व्यर्थ हो गया। मेरे मन की उन्होने जरा भी चिन्ता नही की। उन्होने मेरे विश्वास को तोड दिया लेकिन छोडो इन बातो को। (खडी होकर पास जाती है।) एक बात बतायेंगे ?

माथुर पूछो।

टगर मान लो तुम्हारी उस वाग्दत्ता के स्थान पर मैं होती तो क्या तुम अपने पिताजी का साथ देते ?

माथुर (एकदम) कभी नही, मैं तुम्हारे आकर्षण को भी अस्वीकार नहीं कर सकता था। (टगर सहसा जोर से हँस पड़ती है।) हँसो नही टगर, अब तक मैं जैसे तेज धूप मे चलता रहा हूँ। लेकिन अब यह शेष जीवन किसी की शीतल छाह मे बिता देना चाहता हूँ।

टगर

टगर यानी मेरी छाँह मे। मायुर साहब, मैं तो छलना हूँ, मात्र शृंगार, मेरी छाँह नही होती। मैंने तो सुना है कि आप किसी कुसुम से प्रेम करते है।

मायुर (तीव्र होकर) कौन कुसुम ?

टगर (आखों मे देखकर) वही जिसका पत्र विमला बहन लायी हैं। सुनती हूँ, जिला हॉस्पिटल मे नर्स है।

माथुर है, पर मैं उससे प्रेम नही करता। वह मेरे पीछे पड़ी है। (सहसा खड़े होकर पास आते हैं।) मैं केवल तुमसे प्रेम करता हूँ, केवल तुमसे।

टगर (जोर से हँसकर) आपको शायद अभिनय करने का शौक रहा है। ये रटी-रटाई बातें कुसुम से भी कही होगी। (बैठ जाती है।)

माथुर तुम मेरी भावनाओ को क्यो नही समझती ? कहाँ तुम, कहा कुसुम ?

[डॉक्टर साहब का बोलते हुए तेजी से प्रवेश। मायुर काँप उठते हैं। टगर वैसे ही बैठी रहती है।]

डॉक्टर माथुर साहब, माथुर साहब !

मायुर क्या है ?

डॉक्टर आपने कुछ सुना ?

माथुर (चौंककर) क्या हुआ ?

डॉक्टर ठेकेदार साहब गिरफ्तार कर लिये गये है।

माथुर (ठगा-सा) क्या ?

डॉक्टर सीमावर्ती सड़को के निर्माण के बारे मे जो गड़बड़ चल रही थी उसकी जाच के लिए कमीशन नियुक्त हो गयी है। उसी सम्बन्ध मे यह गिरफ्तारी हुई है।

माथुर और भी कुछ हुआ ?

डॉक्टर आपके तबादले का हुक्म भी हो गया है।

माथुर (पीला पडकर बठ जाता है।) तबादले का हुक्म हो गया, तो नाज़िम साहब जीत गये। (पसीना पोछता है।)

[टगर सारे समय गभीर बनी रहती है। तभी मेजर पुरी और ठाकुर साहब प्रवेश करते हैं।]

पुरी हा, माथुर साहब, नाजिम साहब जीत गये। वह आपको याद कर रहे है।

माथुर (हँसता है।) अब तो याद करेगे ही। और आप भी ठीक अवसर पर ही आते है।

पुरी माफ कीजिये, आना ही पडता है।

माथुर जी हा, चलिये।

[मेजर पुरी माथुर और डॉक्टर चले जाते हैं। ठाकुर टगर के पास आकर कहते हैं।]

ठाकुर देखा टगर, इस रेगिस्तानी सागर मे कितनी शार्क मछलिया भरी पडी है! ये रेत की लहर जितनी सुन्दर दिखायी पडती हैं उतनी ही भयानक हैं। माथुर साहब से मुझे यह आशा नही थी। हम उनके घर ठहरे और

टगर (सहसा) क्या माथुर साहब का तबादला रुकवाने के लिए कुछ नही हो सकता ?

ठाकुर (अचरज से) यह तुम कहती हो! ये घडियाल, ये मगरमच्छ, ये दरिन्दे—ये सब देश के दुश्मन है, टगर! ये खूख्वार जानवर बडी मुश्किल से पकडे जाते है। इनके बचाने की बात सोचना अपराध है।

टग

(व्यंग्य से) कहीं प्रेम-प्रेम तो नहीं हो गया ? (हँसता है।)

टगर (हँसती हुई) डरो नहीं, यह बात नहीं है। ऐसे ही कह दिया था। तुम तो सचमुच ही डर गये। लालची कहीं के ! आओ, घूमने चल। (पास आकर) बड़े बुरे हो। इतनी देर कर दी।

ठाकुर सचमुच उस झमेले में बहुत देर हो गयी। पर आज तो पूर्णिमा है। सारी रात चांदनी छिटकेगी। लेकिन तुम उदास क्यों हो गयी ? मैंने तो मजाक किया था। न न, मुसकराओ। नहीं तो (टगर हल्के से हँसती है।) हाँ, ऐसे। तुम मुसकराती हो तो चमेली की कलियाँ महक उठती हैं। आओ, आज तो गांव में घूमने चलें। रात वहीं बितानी है। लोक-गीतकारों की एक मण्डली वहाँ बुलायी है। बड़ा आनन्द आयेगा।

टगर चलो न बाबा, बोल-बोलकर देर कर रहे हो। चांदनी रात में क्या इतनी ज़ोर से बोला जाता है !

ठाकुर (प्रेम से) टगर ! तुमने तो मुझे पागल कर दिया है। (दोनों ज़ोर से हँस पड़ते हैं।)

टगर (हँसते हँसते) तब तो राची जाना होगा।

ठाकुर जा सकता हूँ, अगर तुम भी मेरे साथ चलो।

टगर जहाँ ले चलोगे, वहीं चलूंगी।

[दोनों हँसते हुए बाहर चले जाते हैं। प्रकाश धुंधलाने लगता है। दूसरे क्षण वहाँ अंधकार छा जाता है। फिर से प्रकाश होने पर वहाँ लगभग वैसी ही स्थिति है। पर दस दिन बीत चुके हैं।

[मञ्च पर विमला अकेली दिखायी देती है। वह परेशान होकर इधर-उधर घूम रही है। बार बार खिडकी से बाहर झाकती है। एकाएक देखकर।]

विमला — लो आखिर आ ही गयी। विठाकर चली गयी। यह भी नही सोचा कि

[टगर का मुसकराते हुए तेजी से प्रवेश]

टगर — मुझे बहुत खेद है विमला वहन, आपको राह देखनी पडी। हुआ यह कि मैं उधर से ही नाजिम साहब के पास चली गयी थी। स्त्रियो के क्लब के वारे मे उनसे वात कर लेना बहुत जरूरी था।

विमला — (चकित) तुम नाजिम साहब के पास गयी थी ?

टगर — (हँसकर) क्यो, इसमे क्या है ? तुम सोचती हो, उन्होने हमे निकाल दिया था। नही, निकाला नही था, वडे स्नेह से स्थानाभाव की वात कही थी। उसमे अलगाव कसा ? और फिर यहाँ उनकी अनुमति के विना कोई वडा काम कर भी तो नही सकते।

विमला — मैंने सुना है, इनका तबादला होने वाला है ?

टगर — विमला वहन ! शासन मे व्यक्ति का कोई मूल्य नही होता। एक जाता है, दूसरा आता है, लेकिन शासन चलता रहता है। ये हा कर जायगे तो नये नाजिम मना नही करगे।

विमला — तो इन्होने 'हा' कर दी ?

टगर — एकदम कैसे कर देते ? शासक ठहरे न लेकिन च तक कर ही देंगे। (हँसकर) सुन्दर स्त्री होना यही तो लाभ है।

[सब हठात काँप उठते हैं और फिर स्तब्ध हो रहते हैं। फिर एक साथ बोल उठते हैं।]

टगर (गंभीर स्वर) मृत्यु हो गई!

विमला (चकित) क्या कहते हैं आप?

डॉक्टर कहाँ मृत्यु हुई? कैसे हुई?

विमला ज़रूर किसी तस्कर की गोली से उड़े होंगे।

पुरी (अल्प विराम) मुझे बहुत अफसोस है कि वे किसी तस्कर की गोली से नहीं, मेरी गोली से मारे गये हैं। (विमला और डॉक्टर हतप्रभ से एक दूसरे को देखते हैं।) तस्कर व्यापारियों का जो दल कल हमने पकड़ा था, उसी में वे थे। उन्होंने हमारा मुकाबला किया। हमारे दो सैनिक मार डाले।

डॉक्टर (ठगा-सा) ठाकुर साहब और तस्कर व्यापारियों के दल में? नहीं हो सकता। आप आप

[टगर तो जैसे प्रस्तर प्रतिमा बन गयी है। विमला कभी उसे देखती है कभी पुरी को।]

पुरी मुझे स्वयं विश्वास नहीं आता था। पर वह न केवल उसी दल में थे, बल्कि एक अन्तर्राष्ट्रीय दल के भी प्रभावशाली सदस्य थे।

[सहसा विमला उबल पड़ती है।]

विमला तो यह बात है, टगर! यह रूप, ये बातें यह नाटक, यह सब इसलिए था। मेरा माथा तो पहले ही ठनका था। तुम नारी नहीं, नागिन हो।

टगर (जैसे गह्वर में से बोलती हो) हाँ, बहन, नारी नागिन ही होती है। तुमने ठीक कहा था, नारी होना ही लानत

है। लेकिन

पुरी (सहसा विमला से) आप शायद जानती नहीं, यह सब इन्हीं के कारण सम्भव हो सका है।

डॉक्टर (अल्प विराम) इनके कारण !

विमला यह नहीं हो सकता नहीं, यह नहीं हो सकता।

पुरी लेकिन हुआ यही है। इन्होंने माथुर साहब को सब कुछ बता दिया था और माथुर साहब से नाजिम साहब को। इसलिए उनका तबादला मसूख हो गया है। वे यहाँ आ चुके हैं। (एक क्षण कोई कुछ नहीं बोल पाता। एक दूसरे को अजनबी की तरह देखते हैं। तभी माथुर साहब प्रवेश करते हैं।)

माथुर हलो, टगर ! (सबको देखकर) अरे, आप सब लोग यहीं हैं। बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर। आपको यह जानकर और भी खुशी होगी कि मेरा तबदला मसूख हो गया है। मैं यहीं रहूँगा। इसी घर में। और टगर, तुम भी यहीं रहोगी। तुम्हारे कारण ही तो यह सब हो सका है। सरकार से तुमको इसका पुरस्कार मिलेगा। फिलहाल मैं तुम्हें अपना सेक्रेटरी नियुक्त करता हूँ। इसी क्षण से।

[उसी तरह सब लोग माथुर साहब की ओर देखते हैं। अल्पविराम के बाद मेजर पुरी कहते हैं।]

पुरी माफ कीजिये, श्रीमती ठाकुर ! नहीं-नहीं, टगर बहन, मैं आपको लेने के लिए आया हूँ। मुझे बहुत दुख है कि आपको शिनाख्त के लिए मेरे साथ चलना होगा।

[टगर के मुख पर कोई भाव नहीं है।

टगर

वह दृढ़ता से आगे बढ़ती है।]

टगर चलिये, मेजर साहब !

[दोनों धीरे धीरे बाहर चले जाते हैं।
मायुर भी पीछे-पीछे जाता है। मंच पर
रह जाते हैं डाक्टर और विमला।]

विमला हे भगवन, कैसे कसे लोग हैं इस दुनिया में !

डॉक्टर इसीलिए तो यह दुनिया है। लेकिन आओ, हम
लोग चलें। कहीं माथुर साहब न लौट आयें।

विमला कहे देती हूँ, अब इनके पास आए तो मुझसे बुरा
कोई न होगा। जहर खा लूंगी।

डॉक्टर खा लेना, पर अभी तो यहां से चलो।

[दोनों तेजी से बाहर चले जाते हैं।]

द्वितीय अक

[तीन महीने बाद वही स्थान। घर का रूप कुछ सुधर गया है, लेकिन वातावरण मे एक अजीब-सी घुटन है। पर्दा उठने पर माथुर साहब और टगर दोनो सोफे पर बैठे दिखाई देते हैं। माथुर के चेहरे पर एक अजीब सी बेबसी है, लेकिन टगर सदा की तरह प्रफुल्लित दिखायी देती है।]

टगर (हँसती हुई सोफे से उठती है।) मुझे तो बार-बार डॉक्टर की बायोलॉजी की याद आ जाती है। कल जब उनकी पत्नी ने कहा कि अब बूढे हो चले हो, कुछ तो शम किया करो तो बोले, बायोलॉजी के अनुसार मद कभी बूढा नही होता। हर सात वष बाद उनके शरीर मे नयी ग्रथियाँ निकल आती हैं। सुना आपने, नयी ग्रथियाँ!

माथुर (चौंककर) नयी ग्रथियाँ! क्षमा करना, मै समझा नही।

टगर (पास बैठती हुई) और आप समझेगे भी नही। घर मे बैठकर कही कुछ समझा जाता है? चलिये, नहर के किनारे घूम आयें। आज पूर्णिमा है। पूर्ण चद्र की ज्योत्स्ना जब धरती के विस्तार पर फैले हुए रेत पर बिछ जाती है तो ।

टगर /

माथुर (एकदम उठकर) आह टगर, वही लोकगीतो की भाषा ! मुझे दुख है, मै ठाकुर साहब की तरह बातें नही कर सकता। मैं मैं स्मगलर नही हूँ। (सहसा टगर की ओर देखकर जो उसकी ओर देखे जा रही है।) मुझे क्षमा कर दो, टगर ! और ऐसा करो कि किसी को साथ लेकर तुम चली जाओ । मुझे शायद देर लगेगी । कुछ जरूरी काम है।

टगर काम से मुक्ति के लिए ही तो कहती हूँ। और जो काम है, वह मुझे मालूम है।

माथुर नही-नही, टगर ! सचमुच आवश्यक काम है। अभी ठेकेदार साहब आ रहे है। मैंने सेठ राधाकृष्ण, डॉक्टर साहब तथा विमला बहन को बुलाया है। उनसे कुछ जरूरी बाते करनी है।

टगर (पास आकर) और मैं इस योग्य नही हूँ कि उन जरूरी बातो को जान सकू । समझ मे नही आता है कि इधर आपको क्या होता जा रहा है ?

माथुर (नि श्वास) मैं खुद भी समझ नही पा रहा। आजकल सब लोग मुझसे बचकर चलते ह। मुझसे कतराते हे। तब तो वे सब यही पडे रहते थे, और अब बुलाने पर भी टाल जाते है।

टगर तो इसमे इतना चिंतित होने की क्या बात है ?

माथुर (अल्प विराम) है तो नही लेकिन फिर भी

[ठकदार गहलौत का प्रवेश]

गहलौत डॉक्टर साहब ने आने से इनकार कर दिया है। कहते है, एक घायल को देखने के लिए उन्हे तुरन्त बाहर जाना है। उसकी हालत खराब है।

माथुर और डॉक्टरनी साहिबा ?

गहलौत वे कही जाने की तैयारी मे लगी हुई है। माफी माँग ली है।

माथुर सेठ राधाकृष्ण ?

गहलौत वे भी कल कही जा रहे है। कहने लगे, माफी चाहता हूँ। लौटकर आऊँगा, आज आना मुमकिन नही होगा।

माथुर (एकदम तेज होकर) मैं सब कुछ समझता हूँ। यह भी जानता हूँ कि वे सब कहाँ जा रहे है। असल मे वे मुझे सताना चाहते हैं। लेकिन वे यह नही जानते कि मैं किस मिट्टी का बना हूँ। मैं मैं चाहूँ तो सबकी पोल खोल दू। शराब पीकर लोग रोज रात को लडते है। और डॉक्टर की जेब भरती है। जो घायल हुआ है वह चाहता है उसका घाव खूब गहरा लिखा जाना चाहिए, जो घायल करता है वह चाहता है घाव को बहुत साधारण बताया जाये। दोनो डॉक्टर को रिश्वत देते है। (बेचनी से टहलने लगता है। गहलौत अबूझ-सा देखता है।)

टगर (एकदम) ठेकेदार साहब, आपको किसी के पास जाने की जरूरत नही है। मै जानती हूँ, यह सब मेरे कारण है। इस तरह का छोटापन इन्ही कस्बो मे चलता है। दूसरो के निजी मामलो को सावजनिक बनाना ऊहूँ, इससे तो यही अच्छा है कि वे अपने दिलो मे झाककर देखे। (माथुर के पास जाकर) आइये, आइये, हम चलें।

माथुर टगर आज मेरा मन कही भी जाने को नही कर रहा।

टगर तो इसका क्या मतलब है कि मैं सचमुच आपके दुख

का कारण बन गयी हूँ ।

माथुर (परेशान होकर) मेरा यह मतलब नही था।

टगर तो फिर उठिये।

माथुर (बबस सा उठता है।) अच्छा भई, चलो।

टगर मैं अभी आयी। बस कपडे बदल लू।

माथुर अच्छा। (टगर अन्दर जाती है ठकेदार से) गहलौत, टगर ठीक कहती है, अब किसी के पास जाने की जरूरत नही है। मैंने इस कस्बे के लिए क्या नही किया पर ये लोग

गहलौत सचमुच। बडे एहसान फरामोश है यहा के लोग। जब से आप आये हैं, कस्बे का रूप ही पलट गया है। बूद-बूद पानी को तरसते थे। आपने कितनी जल्दी वाटरवर्क्स तैयार करवा दिया। कितनी जल्दी सडक बन गयी। नालिया तैयार हो गयी। कमेटी तो सौ वर्ष मे भी यह सब नही कर पाती।

माथुर (व्यग्य से हँसता है।) ये लोग इस काबिल नही हैं, सचमुच इस काबिल नही हैं। मैं इन्हें सबक सिखा दूँगा मैं मैं (एकाएक याद करके) और हा, तुम ह्विस्की लाये ?

गहलौत जी, दोपहर को ही दे गया था।

माथुर ठीक है। आप अब जा सकते हैं।

गहलौत बहुत अच्छा। कल सवेरे फिर हाजिर होऊँगा।

[नमस्कार करके गहलौत चला जाता है। उसी क्षण टगर अन्दर से आती है। माथुर उधर देखते ही ठिठक जाते हैं, मानो मत्रमुग्ध हो उठे हों।]

टगर (मुसकराकर) ऐसे क्या देख रहे है ? पहली बार मिले

हैं क्या ?

मायुर (मुग्ध सा) सच टगर, जब भी तुम्हें देखता हूं तो ऐसा लगता है जैसे पहली बार मिले है। अपने को सँवारना कोई तुमसे सीख ।

टगर (खुशामद के स्वर मे) यह सब तुम्हारे लिए ही तो हे । तुम हो कि न जाने किस चिन्ता मे डूबे जा रहे हो ? मैं यदि तुम्हें चिताओ से मुक्त न कर सकी तो फिर मेरा उपयोग ही क्या ? तुम नही जानते, अब तक तो मैं भटकती ही रही हू । मन का मीत तो अब मिला है।

माथुर सच टगर ! (पास आता है।)

टगर (पूर्ववत) एक था जो सदा अभिमान मे चर रहता था, जो नारी-स्वातन्त्र्य के गुण गाकर भी नारी को मात्र भोग की सामग्री समझता था । अपने इशारो पर नचाना चाहता था । दूसरा था जो नारी को खरीदने मे विश्वास रखता था, जो मात्र उसे अपनी सफलता का एक साधन बनाना चाहता था ।

माथुर (क्षमा याचना का स्वर) मुझे दुख है कि तुम्हे यह सब कहने की आवश्यकता पडी। नही टगर, अब ऐसा नही होगा ।

टगर (अभिमानपूर्वक) तुम हमेशा यही कह देते हो ।

माथुर यह अन्तिम बार है ।

टगर झूठे कही के ! (अल्प विराम) वचन दो कि अब ऐसा नही करोगे ।

[अपना हाथ आगे बढा देती है । माथुर उसे थाम लेता है ।]

माथुर मैंने वचन दिया । (दोनो जोर से हँसते ह ।) सच टगर,

मैं भी भटकता ही रहा हूँ। किनारा अब मिला है। लेकिन कभी कभी कमजोरी उभर आती है। और मैं बेबस हो उठता हूँ। उस समय मुझे तुम्हारी जितनी आवश्यकता होती है उतनी शायद कभी नहीं होती। मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे ज़बरदस्ती अपने साथ खींचकर ले चलो।

टगर तो उठो, चलो !

माथुर एक शर्त पर।

टगर उस शर्त का प्रबंध मैंने पहले ही कर लिया है।

माथुर तो मुझे इतनी देर से क्यों परेशान कर रही थी ? दुष्ट कहीं की !

[टगर बड़े ज़ोर से खिलखिलाकर हँस देती है। डॉक्टर प्रवेश करते हैं।]

माथुर कौन ? डाक्टर साहब ! (व्यंग्य से) कहिये, कैसे आना हुआ ?

डॉक्टर आपके लिए एक शुभ समाचार है।

माथुर कैसा शुभ समाचार ?

डॉक्टर आपने किसी से वादा किया था ?

माथुर कैसा वायदा ? और किससे ?

डॉक्टर किससे, यह आप अच्छी तरह जानते है। (अल्प विराम) याद न आया हो तो बताये देता हूँ आपने उससे कहा था कि पत्नी से अलग रहते मुझे दो वर्ष हो चुके है और वह तलाक के लिए राज़ी हो गयी है।

माथुर तो उससे तुम्हे क्या ? यह मेरा निजी मामला है। लेकिन यदि तुम जानना ही चाहते हो तो जान लो कि वह तलाक कभी का मजूर हो चुका है।

डॉक्टर लेकिन जिससे तुमने शादी का वायदा किया था,

उससे शादी नही की ?

माथुर तुम्हे इस बात से मतलब ?

डॉक्टर डॉक्टरी का पेशा ही ऐसा है। न चाहकर भी मुझे बहुत-सी बातो से मतलब रखना पडता है। तुम्हारी उस चहेती ने खुदकशी कर ली है और पुलिस उसका कारण जानना चाहती है।

[माथुर सहसा पीला पड जाता है और टगर एकदम अन्दर चली जाती है।]

माथुर (लडखडाकर) क्या क्या उसने खुदकुशी कर ली ?

डॉक्टर (अल्प विराम) जी हाँ।

माथुर (सहसा जोर से) तो मुझे क्या ? मेरा उससे कोई सम्बन्ध नही।

डॉक्टर आपका उससे कोई सबध नही। आप तो केवल शिकारी हैं। बस, एक शिकार किया है। (हँसकर) लेकिन ये लडकियाँ भी खूब है। शिकारी को ही प्यार करती है। खैर, मुझे इन बातो से कोई मतलब नही। पुलिस कप्तान आपको याद कर रहे हैं।

माथुर (व्यग्र होकर) डॉक्टर।

डॉक्टर मैं कुछ नही जानता।

माथुर (करुण स्वर) क्या सचमुच उसने कुछ कहा है ?

डॉक्टर अगर मैं यह कहूँ कि उसने सब कुछ बता दिया है तो ?

माथुर तो (सँभलकर) लेकिन मैने उससे कोई वायदा नही किया। उसके पास इस बात का कोई सबूत नही।

डॉक्टर मुझे नही मालूम कि पुलिस के पास क्या सबूत है। एक डॉक्टर के नाते मैं यह बताने के लिए बाध्य कि कुसुम ने आत्महत्या की है और ।

माथुर और ?

डॉक्टर और यह कि कुछ दिन पहले तक वह आपके पास बहुत आती-जाती थी। उसने मुझसे यह भी कहा था कि आप उससे विवाह करने को तैयार है।

माथुर (एक्साइटेड स्वर)यह सब गलत है। (अल्प विराम) बेशक वह मेरे पास आती थी लेकिन मैंने उससे विवाह का वायदा नही किया था। कर ही नही सकता था। क्या मने कभी आप लोगो से जिक्र किया ?

डॉक्टर यह आपका बिलकुल निजी मामला था। खैर, अब जो कुछ आपको कहना है, पुलिस-कप्तान से कहिये। देर होने पर वे यहा आ सकते हैं और मैं नहीं चाहता (टगर का प्रवेश) कि श्रीमती माथुर के सामने

टगर श्रीमती माथुर नही, डॉक्टर साहब, टेगर कहिये।

डॉक्टर जी हा, टगर। माफ कीजिये।

टगर (मुसकराकर) माफी किसलिए मागते है ? चलिये, मैं भी आपके साथ चलती हूँ। आइये माथुर साहब, परेशान होने की कोई जरूरत नही। आत्महत्या कुसुम ने की है। वह बुजदिल थी। यदि सचमुच ही उसके पास कोई प्रमाण था तो उसे आत्महत्या करने की जरूरत नही थी। यह विशुद्ध ईर्ष्या है, और ईर्ष्या अपने आप मे गुनाह है। कानून ईर्ष्या का पक्ष नही ले सकता।

[माथुर और डाक्टर की दृष्टि बारी बारी टगर से मिलती है। डाक्टर कांपता है और माथुर दृढ होता है।]

माथुर कभी नही ले सकता, मैं भी यही कहता हूँ। मेरा नाम व्यर्थ ही घसीटा जा रहा है। चलिये मैं कहता

हूं। आओ, टगर !

[दोनो दृढ़ता से बाहर की ओर बढते हैं और डॉक्टर हतप्रभ सा एक क्षण ठिठकता है। फिर वह भी पीछे पीछे चला जाता है। प्रकाश धुधलाने लगता है। एक क्षण के लिए मच अधकार मे डूब जाता है। उसके बाद जब फिर पूर्वत प्रकाश होता है तो मच पर माथुर और टगर दिखाई देते हैं। माथुर बहुत प्रसन्न है और धीरे धीरे पी रहा है। टगर उ मुक्त हृदय से गा रही है।]

टगर (गाती हुई)

माना कि तगाफुल न करोगे तुम तो
लेकिन खाक हो जायेंगे हम, तुमको खबर होने तक।

माथुर वाह वाह, क्या लोच है तुम्हारे गले मे ! क्या मादक स्वर पाया है तुमने ! उस दिन मीरा का भजन सुना था और आज !

टगर भजन ठाकुर साहब के लिए था। बूढे लोग भजन सुनकर ही प्रसन्न होते है।

माथुर (हसता है।) और जवान गजल सुनकर। क्यो न हो ? गजल का अथ है प्रेम, सौदय, मादकता और उस पर गाने वाली तुम जैसी हो तो प्रेम सहस्र गुणा मादक हो उठता है।

टगर इस हौसला-अफ्जाई के लिए शुक्रिया। लेकिन जानते हो, इधर मुझे कितना सहना पडा है ?

माथुर प्रेम की शक्ति वेदना मे से ही सघन होती है। तुमने भी सहा है और मैंने भी। लेकिन अब सहने का

अन्त आ पहुँचा है। मैं सचमुच तुमसे प्रेम करता हूँ और जानता हूँ, तुम भी मुझसे प्रेम करती हो।

टगर सच ? क्या मैं प्रेम करती हूँ ?

माथुर कह दो, नहीं करती ?

टगर (उच्छ्वास) सचमुच इतना प्रेम मैंने किसी से नहीं *किया।*

माथुर मैं कितना भाग्यशाली हूँ। लेकिन

टगर लेकिन क्या, तुम्हें अब भी कुछ शंका है ?

माथुर टगर, मुझे ठाकुर साहब की याद आती है और ठाकुर साहब से पहले उस साहित्यकार की।

टगर तुम शायद अधिक पी गये हो ? तुम्हें उनकी क्या याद आ रही है ? उन्हें भूलना होगा।

माथुर भूलना तो होगा ही, लेकिन कैसे ?

टगर जैसे मैं भूल गयी हूँ। मुझे कुछ भी तो याद नहीं है। अगर याद होता तो मैं कप्तान-पुलिस से इस प्रकार बातें कर सकती थी ? इस प्रकार तुम्हारी हो सकती थी ?

माथुर यही तो मैं सोचता हूँ। तुम मेरी हो, संपूर्ण मेरी और यही सोचकर मन शंका से भर उठता है कहीं यह छल तो नहीं है ? कहीं जितना कुछ मुझे मिला है वह मुझसे छिन तो नहीं जायेगा ?

टगर यह सब व्यर्थ की शंका है, कमज़ोरी है। मान लो ठाकुर साहब के मरने के बाद मैं यहाँ से चली जाती तब क्या होता ? तब तुम्हें कैसा लगता ?

माथुर (व्यग्र होकर गिलास मेज पर रख देता है।) तब, तब तो मैं खत्म हो जाता। मैं यहाँ नहीं होता।

टगर (आँखों में देखती हुई) और अगर तुम न होते तो

मैं भी खत्म हो गयी होती। मैंने खुदकुशी कर ली होती। सोचो तो, एक या जिसने मुझे अपने योग्य नही समझा। दूसरा मुझ खरीदना चाहता था।

मायुर और तीसरा तुम्हे प्यार करता है। लेकिन किसी को प्यार करने का अथ होता है पीडित होना। तुमको जब पहली बार देखा था तब से मने कितनी वेदना पायी है!

टगर इसीलिए तो मुझे पा सके हो।

मायुर (भावावेश) टगर!

टगर तुम मुझे छोड तो नही दोगे?

माथुर (आवेश मे) यह तुम कैसे कह सकती हो?

टगर क्योंकि तुम अभी शका कर रहे थे।

माथुर नही, तुम्हे यह नही कहना चाहिए था। और मुझे भी वह नही कहना चाहिए था। आओ, हम दानो उन बातो को भूल जाये। अपने भूत को भूल जाये। केवल वर्तमान के बारे मे सोचे और उस भविष्य के बारे मे सोचें जो हम दोनो को साथ-माथ बिताना है।

टगर (सहसा उठ खडी होती है।) भविष्य मे जो मुझे तुम्हारे माथ बिताना है।

माथुर (उठता है और लडखडाता है।) हा, मेरे साथ और किसके साथ? क्या तुम किसी और की बात सोच रही हो?

टगर फिर वही शका! मैं केवल भागने की बात सोच रही हूँ।

माथुर किसके साथ?

टगर (मुडकर हल्के से उसके गाल पर चपत लगाती है।)

तुम्हारे साथ और किसके साथ !

[मायुर हँसने की चेष्टा करता है। उसी चेष्टा मे कुर्सी पर बठ जाता है। टगर भी जोर से हँसती हुई पीछे से उसके कधो पर बाह डालकर अपने चेहरे को उसके चेहरे से सटा देती है।]

टगर चलो, यहाँ से भाग चले।

माथुर मैं तबादले के लिए लिखता हूँ।

टगर और विवाह की तारीख के लिए भी। मै इस अराजक जीवन से तग आ गयी हूँ।

माथुर सोचता हूँ, दोनो काम साथ-साथ हो जायें।

टगर भागना और शादी करना। खूब ! यह तो मैंने सोचा ही नही था। (जोर से हँसती है।) भागना और शादी करना ! (खूब जोर से हँसती है।) भागना यानी शादी करना। शादी करना यानी भागना। पर (एकदम शांत होकर) पर

माथुर (हँसने के बाद) मैं कुछ और सोच रहा था। सुनो, मै अब बहुत जल्दी ही एक्जीक्यूटिव होने वाला हूँ। और चाहता हूँ कि उसी दिन

टगर नही उससे एक दिन पहले, जिससे लोग कह सके कि टगर कितनी भाग्यशालिनी है कि उसके श्रीमती माथुर बनते ही माथुर साहब एक्जीक्यूटिव इजीनियर बन गये।

माथुर दाद देता हूँ तुम्हारी सूझ का। यही होगा यही होगा।

टगर लेकिन मैं श्रीमती माथुर नही कहलाऊँगी। मैं हमेशा टगर रहूँगी।

माथुर मजूर। मुझे यह सब मजूर है।

[यह टगर को सामने की ओर खींचना चाहता है, तभी द्वार पर दस्तक होती है। टगर छिटककर अलग हो जाती है और द्वार की ओर बढ़ती है।)

टगर चले आइये, दरवाजा खुला है। (गहलोत का प्रवेश) आइये, आइये, ठेकेदार साहब! माथुर साहब बहुत देर से आपकी राह देख रहे हैं। अच्छा माथुर साहब, आप ठेकेदार साहब से बातें कीजिये, मैं नाज़िम साहब के पास हो आऊँ।

गहलोत हम आये और आप चल दीं। यह नहीं हो सकता। मैं आपको सवेरे की सफलता के लिए मुबारकबाद देने आया हूँ। (बोतल निकालकर टगर की ओर बढ़ाता है।) यह लीजिये, विशुद्ध स्कॉच है। (पुकारकर) अरे, चले आओ।

[एक क्षण बाद एक लड़का एक बड़ा टोकरा सिर पर रख आता है।]

टगर यह क्या है?

गहलोत कुछ नहीं, आपकी शादी होने जा रही है और हुजूर की तरक्की भी हो रही है। मैं सब सुन चुका हूँ।

माथुर (आवेग से) तुमने सब ठीक सुना है और यह सब इनके कारण हुआ है। नहीं तो पहले नाजिम साहब ने मुझे बरबाद करने में कुछ भी उठा न रखा था। मैं अपनी आँखों से अपने को बरबाद होते देख रहा था और कुछ कर नहीं पा रहा था। लेकिन जब से ये आयी हैं, जैसे जादू हो गया है। जैसे सूरज के उगते ही दुनिया प्रकाश से भर जाती है, वैसे ही

इनके मेरे घर में प्रवेश करते ही मेरी भाग्यरेखा चमक उठी है।

टगर रहने दो इन खुशामद की बातों को। (गम्भीर होकर) ठेकेदार साहब, आप ये सब लाये बड़ी कृपा की, लेकिन अब ध्यान रखियेगा कि भविष्य में ऐसा न हो।

गहलौत (घबराकर) जी जी हाँ।

टगर अच्छा, मैं जा रही हूँ।

[माथुर की ओर देर कर मुसकराती है और फिर बाहर चली जाती है। दोनों एक क्षण एक-दूसरे को देखते खड़ रहते हैं। फिर माथुर का जसे नशा उतर जाता है।]

माथुर बैठो।

गहलौत क्या बात है, कुछ नाराज नजर आती थी?

माथुर नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। औरत कब किस मूड में होगी, ब्रह्मा भी नहीं जानते। कुछ देर पहले शादी की तारीख निश्चित करने के लिए बजिद थी।

गहलौत वह तो होनी ही चाहिए। तीन महीने हो गये। छोटा कस्बा है, लोग तरह-तरह की बातें करते हैं।

माथुर छोटा कस्बा, छोटे दिल, छोटे आदमी। इसलिए तो मैं दिल्ली जाना चाहता हूँ। जितना विशाल नगर है, उतना ही विशाल उसका दिल है। कोई किसी के काम में दखल नहीं देता। कोई किसी के चरित्र की चिन्ता नहीं करता। ये छोटी छोटी बातें टगर इसीलिए नाजिम साहब के पास गयी है।

गहलौत और वे अवश्य सफल होंगी। नये नाजिम उनसे बहुत

प्रभावित है। आपका तबादला हो जायेगा। आप एक्जीक्यूटिव इंजीनियर भी बन जायगे। (जसे कुछ याद आता है।) लेकिन हुज़ूर, यहा कौन आयगा ? आप जैसा दोस्तदिल ?

मायुर (हँसकर) ठकेदार के सभी दोस्त होते है। बस उसे ताश के खेल मे हारना आना चाहिए।

गहलौत (हँसकर) आप तो माथुर साहब, हमारा मज़ाक उड़ाते है।

माथुर मज़ाक ही तो एकमात्र सत्य होता है। तुम्ही कहो, मैंने कुछ झूठ कहा है ? मैं तुम्हे इसलिए तो प्यार करता हूँ कि तुम बन्दानवाजी करते हो। इसीलिए जो भी यहाँ आएगा, तुम्हारा दोस्त ही होगा। तुम इस कला मे पारगत हो।

गहलौत यह आपकी ज़र्रानवाजी है, माथुर साहब, वरना करने वाले तो आप ही है। (अल्प विराम) लेकिन अभी एक तलवार सिर पर लटकी है।

माथुर मैंने टगर से उसकी भी चर्चा की है। तुम यही ठहरो वह कुछ देर मे लौट आयेगी और तुम खुश-खबरी सुनोगे कि हम सब उस केस मे भी बरी हो गये हैं।

गहलौत मैं जानता हूँ श्रीमती टगर को कोई मना नही कर सकता।

माथुर तो लाओ, तुम्हारी वह विशुद्ध स्कॉच कहाँ है ? (गहलौत बग से एक बोतल निकालता है।) अच्छा, एक और है ? अब बताओ, तुम्हारा कोई दुश्मन कस हो सकता है ?

गहलौत (बोतल खोलता है।) शुक्रिया ! (दोनो पग भरता है। एक

मायुर को देता है, एक स्वय उठाकर मायुर के पग से छुआता है।) श्रीमती टगर के लिए जो शीघ्र ही श्रीमती माथुर होने वाली हैं। हमारे नये एक्जीक्यूटिव इजीनियर श्री प्रेमचन्द माथुर की सेहत के लिए !

माथुर श्री दीवानचन्द्र गहलौत की सेहत के लिए।

[दोनों पी जाते हैं। चुपचाप पीते रहते हैं। माथुर लड़खड़ाते हैं।]

क्यो गहलौत, इस सडक के ठेके और यहा के तस्कर व्यापार मे तुमने कम से-कम दस लाख तो कमा ही लिया होगा ?

गहलौत हा माथुर, दस नही तो बारह होगा। इससे कम तो हो नही सकता।

माथुर बारह लाख ! हमने दस लाख की भविष्यवाणी की थी वह तुम रखो। शेष दो लाख हमको दे दो। हम टगर को एक लाजवाब तोहफा देना चाहते है।

गहलौत यह तो मैं पहले ही सोच चुका हूँ। लेकिन माथुर, क्या तुमको विश्वास है कि टगर तुमको प्यार करती है ?

माथुर प्यार किया नही जाता, कराया जाता है। दो लाख के तोहफे को वह अवश्य प्यार करेगी। नही करेगी क्या ?

गहलौत क्यो नही करेगी ? जरूर करेगी। वैसे ही करगी जैसे आप मुझे करते है और मैं आपको करता हूँ। क्यो, ठीक है न ?

माथुर आप तो समझदारी की बातें भी करते है ! (पग ऊपर उठाकर) आपकी समझदारी के लिए जाम

पीता हूँ।

गहलौत (अपना पैग उससे छुआकर) और मैं आपकी कद्रदानी के लिए पीता हूँ।

[दोनो पी जाते हैं और तभी द्वार पर दस्तक होती है। पहले तो कोई नहीं सुनता, फिर दस्तक तेज होती है जैसे कोई बहुत बेचन होकर किवाड पीट रहा हो। गहलौत एकाएक द्वार की ओर बढ़ता है मायुर उसे रोकता है।]

मायुर ठहरो। मुझे यह टगर नही मालूम होती। पहले इस सब को छिपा दो। (जल्दी जल्दी बोतल और पैग मेज की दराज मे रखता है।)

गहलौत अब खोल दू ?

मायुर जरा ठहरो। (अपने मुह पर हाथ फेरता है। अँगडाई लेता है। कपडे झाडता है।) अब खोल सकते हो।

[गहलौत दरवाजा खोलता है। छोटे ठकेदार गुप्ता साहब घबराये हुए आते है।

गुप्ता मायुर साहब हम सब बरबाद हो गये। हम समझे हुए थे कि पुराने केस दबा दिये गये है और सडक के मामले मे हमारे हक मे फैसला होने वाला है। वह सब गलत निकला।

माथुर तुम क्या बक रहे हो ? कही तुमने पी तो नही रखी।

गहलौत जी हा, इसने पी रखी है। तभी तो दरवाजा बन्द करके आया है। गुप्ता साहब, आखिर तुम गुप्ता हो। और गुप्ता लोग बहुत जल्दी घबरा जाते है। टगर के रहते हमे किसी बात का डर नही है।

गुप्ता (व्यग्र होकर) गहलौत साहब, आप दोनों की गिरफ्तारी का हुक्म निकल चुका है। किसी भी क्षण मेजर पुरी आ सकते हैं। अभी समय है, आप यहाँ से भाग जायं।

मायुर मैं भाग जाऊँ, क्या? तुमने अभी गिरफ्तारी की बात कही, क्या सचमुच गिरफ्तारी का हुक्म निकल गया है? आने दो टगर को, मैं उसके साथ अभी भाग जाऊँगा। गहलौत साहब, आप किसके साथ भागेंगे?

गहलौत आपके साथ। (एकदम) नहीं-नहीं, मैं कहीं नहीं भागूँगा। टगर के रहते

गुप्ता टगर, यानी श्रीमती ठाकुर, मैंने उनको नाजिम साहब के पास देखा था।

मायुर चुप रहो। मैं टगर के बारे में कुछ नहीं सुनना चाहता।

गुप्ता मैं कुछ कहना भी नहीं चाहता, लेकिन टगर जिसके साथ रही है उसका सर्वनाश ही हुआ है।

मायुर चुप रहो! ठाकुर तस्कर-व्यापार करता था इसलिए उसका नाश हुआ।

गुप्ता और आप (तभी द्वार पर दस्तक होती है।) मैं कहता हूँ, आप अब भी भाग सकते हैं।

[दस्तक तेज होती है। मायुर और गहलौत भागने की चेष्टा करते हैं। पीछे के द्वार की ओर जाते हैं लेकिन लौट आते हैं।]

मायुर अरे बाप रे! इधर भी पुलिस है।

गहलौत हम बरबाद हो गये।

गुप्ता अब तो एक ही रास्ता है कि आप लोग खुदकुशी कर ले।

माथुर खुदकुशी! नहीं, तुम कायर हो। आने दो टगर को। वह सब ठीक कर लेगी।

गुप्ता तब तो मैं दरवाजा खोल देता हूँ।

[वह दरवाजे की ओर बढ़ता है। माथुर उसे रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन रोक नहीं पाते। दूसरे ही क्षण मेजर पुरी के साथ चार सिपाही अन्दर आते हैं।]

पुरी मुझे अफसोस है माथुर साहब कमिश्नर साहब के हुक्म से मैं आपको गिरफ्तार करने आया हूँ। और आपको भी, गहलौत साहब! गुप्ता साहब ने आपको सब कुछ बता ही दिया होगा। वैसे ये रहे आपके वारण्ट।

माथुर (कांपकर) कप्तान साहब, क्या आप कुछ देर नहीं रुक सकते? मेरी पत्नी

पुरी आपकी कोई पत्नी नहीं है।

माथुर मेरा मतलब है टगर

पुरी वह नाजिम साहब के पास है।

माथुर तुम क्या बकते हो?

पुरी मैं ऐसी भाषा सुनने का आदी नहीं हूँ। आपको मेरे साथ चलना होगा।

[उसके इशारे पर सिपाही आगे बढ़ते हैं। माथुर और गहलौत दोनों पीछे हटते हैं। लेकिन सिपाही उन्हें गिरफ्तार कर लेते हैं।]

पुरी मुझे अफसोस है, माथुर साहब।

माथुर क्या यह बिलकुल सम्भव नहीं कि मैं टगर से मिल सकूँ ?

पुरी मुझे डर है, उनसे तो अब अदालत में ही भेंट होगी।

माथुर तुम झूठ बोल रहे हो। वह सुनेगी तो भागी आयेगी और मुझे छुड़ा लेगी। देख लेना।

[पुरी हँसता है और वे सब धीरे धीरे बाहर हो जाते हैं। सबसे पीछे गुप्ता है।]

तृतीय अक

[एक महीने बाद प्रथम अक और प्रथम दृश्य वाला कमरा। अब उस कमरे मे बीचोंबीच एक सोफासेट पडा है। ताश खेलने की मेज एक कोने मे चली गयी है। दीवारों पर राजस्थानी कला के दो चित्र टगे हैं। पर्दा उठने पर नाजिम साहब जो २७ २८ वर्ष के प्रभावशाली युवक हैं डॉक्टर से बातें करते दिखायी देते हैं।]

डॉक्टर नाजिम साहब, चेतावनी देना मेरा कर्तव्य था। सोचना आपका काम है। टगर परित्यक्ता है और वह जिसके भी साथ रही है, उसका सर्वनाश ही हुआ है।

नाजिम वह सर्वनाश उनके अपने कामो का परिणाम था। टगर तो उनके वास्तविक रूप को प्रकट करने मे सहायक हुई है। उसने समाज के भ्रष्ट रूप को बेनकाब किया है।

डॉक्टर लेकिन नारी का जो आदर्श है, पत्नी की जो कल्पना हमारे समाज मे प्रचलित है टगर उससे बहुत दूर है। वह स्वच्छन्द नारी है। वह तीन-तीन व्यक्तियो के साथ रह चुकी है।

नाजिम लेकिन अपनी इच्छा से नही। वह विवश कर दी

गयी थी। उनके साहित्यिक पति ने उसे इसलिए छोड दिया था कि वह उनके साथ साम, दामू और कापका के सम्बन्ध मे बातें नही कर सकती थी। नयी कविता और नयी कहानी के दर्शन पर चर्चा नहीं चला सकती थी।

डाक्टर लेकिन ठाकर साहब और माथुर साहब ?

नाजिम दोनो ने उसे अपने-अपने घृणित काम के लिए उपयोग मे लाने का प्रयत्न किया। क्या उन्होंने टगर को ठगा नहीं ? ठाकुर साहब तो आयु मे भी उससे पचीस वर्ष बडे थे ।

डॉक्टर मद की आयु नही देखी जाती।

नाजिम (क्रुद्ध होकर) यह आप कहते हैं ? आप डॉक्टर हैं। लेकिन नही। सबसे पहले आप कट्टरपंथी हिन्दू हैं, जो केवल अपना स्वार्थ देखता है—इस लोक में भी, परलोक मे भी।

डॉक्टर (बेचैन होकर) मैं माफी चाहता हूँ। मैं तो केवल कस्बे की राय आपको बता रहा था। आपको यहा रहना है इन पर शासन करना है। व्यक्तिगत रूप से मुझे कोई आपत्ति नही है

[उसी क्षण बाहर से कई व्यक्ति आते हैं। मेजर पुरी डाक्टर की पत्नी विमला माथुर और माधुरी। माथुर प्रसिद्ध लेखक है। आयु तीस वर्ष। सौम्यदर्शन प्रभावशाली व्यक्तित्व बढ़िया सूट पहने, चश्मा लगाये, सिगार पी रहा है। माधुरी अत्यन्त आधुनिका है। ढीला जूडा, बिना बाँह का ब्लाउज और साडी पहने

है। उसी रग के सडिल हैं। उसी रग कों
बिन्दी रग गौर, नक्श तीखे हैं।]

पुरी नाजिम साहव, ये है शेखर साहब। प्रतिनिधि मडल के नेता है। और ये है माधुरी। इनका कण्ठ अत्यन्त सुरीला है। (शेखर से) और आप है यहाँ के नाजिम।

नाजिम (हाथ आगे बढाकर) आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

शेखर (हाथ मिलाकर) आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। धन्यवाद !

माधुरी नमस्कार। मुझे भी आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। हम लोग अभी सीमावर्ती प्रदेश देखकर आ रहे हैं। आपका काम सचमुच कठिन है। नोमैंस लैण्ड बहुत ही कम हे इसलिए तस्कर-व्यापार बडी सरलता से हो सकता है।

नाजिम मुझे खुशी है कि आप हमारी स्थिति को समझते है।

शेखर इसीलिए तो हम यहाँ आये है। वैसे हम लोग विशुद्ध साहित्यिक है लेकिन प्रधानमत्री से मिलकर हम उनको यहाँ के बारे मे बतायेगे।

नाजिम शुक्रिया ! (पुरी से) मेजर साहव, आपकी देखभाल तो ठीक हो रही है न ? आपको किसी तरह की असुविधा नही होनी चाहिए।

शखर मेजर साहव ने हमारे लिए जो कुछ किया है, वह शायद कोई और नही कर सकता था।

नाजिम मुझे खुशी है। अच्छा, आप क्या पीयेगे ?

शेखर जो आप पिलाना चाहे।

नाजिम (माधुरी से) और आप ? क्षमा कीजिये, मै आपको कुमारी कहू या श्रीमती ?

माधुरी कुमारी कहना ठीक ही रहेगा, नाजिम साहब ! मेरे

लिए आप वही मँगवा दीजिये जो शेखर पीयेंगे।

पुरी नाज़िम साहब, आज नारी पुरुष से किसी भी क्षेत्र म पीछे नही रहना चाहती।

माधुरी क्या आप चाहते हैं वह रहे ? क्या रहे ?

पुरी मै तो उनको अपने से भी आगे देखना चाहता हूँ।

नाजिम और बहुत शीघ्र देखगे भी।

माधुरी (मुसकराकर) शुक्रिया !

नाज़िम अच्छा डॉक्टर, आप तो कॉफी पीयगे ?

डॉक्टर क्यो साहब, मैं काफी के योग्य क्यो समझा गया ? जी नही, ऐसे अवसरो पर मैं भी पीछे नही रहता। (सब अट्टहास करते हैं।)

नाजिम ऐसे अवसरो पर जहा आपकी पत्नी न हो, लेकिन यहाँ तो आपकी पत्नी मौजूद हैं।

डॉक्टर (अकचाकर) जी, तब तो मैं कॉफी ही पीऊँगा। (कहकहा)

विमला (बिनचिनाकर) नही नही, नाज़िम साहब ! समझ लीजिये मैं नही हूँ। मैं सचमुच टगर बहन के पास जा रही हूँ। मैं तो आपको बधाई देने आयी थी।

डॉक्टर मैं भी इसीलिए आया था । मुझे बहुत खुशी है, नाज़िम साहब। टगर इस युग की श्रेष्ठ नारी है।

पुरी मेरी भी बधाई स्वीकार कीजिये। मैं टगर का मुरीद हूँ। हमारे देश मे ऐसी नारियो का होना हम इस विश्वास से भरता है कि हम बडी तेजी से आगे बढ रहे है।

नाज़िम मैं आप सबका शुक्रिया अदा करता हूँ। लेकिन अच्छा हो आप स्वय टगर को बधाई दे।

शेखर क्षमा कीजिये, मुझे मालूम नही था। मेरी बधाई

भी ले।

माधुरी और मेरी भी।

नाज़िम शुक्रिया! लीजिये, वह इधर ही आ रही है।

[दो बेरे प्लेटो मे शराब, सोडा और सोफ्ट ड्रिंक लेकर आते हैं। पीछे टगर है। वह अब बिल्कुल बदल गयी है। मुख पर सौम्यता, सफेद साड़ी जूड़े मे मोतिया के सफेद फूल। उसको देखते ही सब लोग सामूहिक स्वर मे बधाई देते है।]

डॉक्टर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें!

पुरी हार्टी कांग्रेचुलेशन्स!

माधुरी आपके दीर्घ और आनन्दमय वैवाहिक जीवन की कामना करती हूँ।

[मुसकराती हुई टगर सिर झुकाकर बधाई स्वीकार करती है।]

टगर मैं आपको किन शब्दो मे धन्यवाद दू! (तभी उसकी दृष्टि शेखर से मिलती है। वह परेशान हो उठता है। माधुरी उसे देखकर हतप्रभ होती है। दो क्षण देखने के बाद) शेखर, तुम्हारे आने का मुझे पता था।

शेखर (दृढ़ होने का नाटय करता है।) लेकिन मुझे तुम्हारे यहाँ होने की आशा नही थी, रश्मि! पर अब सब-कुछ जानकर बहुत खुशी हुई। तुम्हारे दीर्घ और सुखी जीवन के लिए हृदय से कामना करता हूँ।

टगर शुक्रिया!

[सब लोग बारी बारी अपना गिलास भरते हैं। लेकिन सभी की दृष्टि शेखर और टगर पर जम जाती है। टगर सब

को देखती है और मुसकराती है।]

टगर आप शायद आश्चय कर रहे हैं।

डॉक्टर (अनजान सा) आप पूव-परिचित जान पड़ने हैं।

पुरी (अनजान सा) इतनी दूर आकर अपने किसी परिचित को पाना बड़ा सुखद होता है।

टगर (व्यंग्य से) जी हाँ, सुख तो मानने की बात है वसे दुखी होने का कोई कारण भी नही है। प्रसिद्ध लेखक शेखर ही मेरे अर्थात रश्मि के पूव पति हैं। मेरा असली नाम रश्मि प्रभा है। टगर तो ठाकुर साहब ने किसी लोकगीत मे खोज निकाला था। माथुर साहब इस क्षेत्र मे शून्य थे। नाजिम साहब युवक हैं। शायद उन्हें यह नाम अच्छा न लगे और वे मुझे पूर्वा कहकर पुकारें।

[हसती है। पहले क्षण सब हतप्रभ रह जाते हैं। फिर नाजिम मुसकराते हैं। पुरी अचरज से दोनों को देखते हैं। शेखर का चेहरा घृणा से खिंच जाता है। नशर फीका पड़ता है। लेकिन फिर खिलखिलाती हुई हसने लगता है।]

डॉक्टर (मुसकराकर) क्या जमाना आ गया है!

विमला (निश्वास लेकर) हे राम, अब क्या क्या देखना होगा?

पुरी (विमला के कान मे) आपको क्या लगा रहा है?

विमला (खिसियाकर) मुझे लगने ल गया? उनका काम वे जानें। यह तो नया युग है। मैं ठहरी पुराने युग की, अब क्या बदलूंगी?

[सब अलग-अलग दलों में बट गये हैं।

शेखर माधुरी को लेकर एक ओर चला जाता है। नाज़िम साहब टगर को ओर देखकर ऐसे मुसकराते ह मानो कहते हो ये पुराने लोग। टगर शात रहती है। डाक्टर बाहर जाने को मुड़ते हैं।]

डॉक्टर अच्छा मित्रो, अच्छा नाजिम साहब, अब आज्ञा दीजिये। मेरे योग्य सेवा हो तो बताइये।

नाज़िम धन्यवाद, सब आपको ही करना है।

विमला नमस्कार, नाज़िम साहब! नमस्कार, टगर बहन!

[दोनों चले जाते हैं। जाते जाते मुद्रा कठोर होती है विमला मुड़कर देखती है। उसकी दृष्टि टगर से मिल जाती है। वह कापती है और शीघ्रता से बाहर निकल जाती है।]

पुरी (शेखर से) कहिये शेखर साहब, आपका क्या प्रोग्राम है?

शेखर जो आप बनायें। मैं समझता हूँ जो कुछ हमें देखना था, देख चुके। कल हमको चले जाना चाहिए।

टगर लेकिन हमारे साथ खाना खाने के बाद ही आप लोग जा सकेंगे। (माधुरी से) माधुरी बहन, मुझे सब-कुछ मालूम है। तुम्हे परेशान नही होना चाहिए।

माधुरी यह आपने कसे जाना कि मैं परेशान हूँ?

टगर यह हुई बात। तो आज रात आप सब हमारे साथ खाना खा रहे ह? (पुरी से) नियमित रूप से निमत्रण-पत्र भेज दिये जायेंगे और आप दूसरे सदस्यों से भी कह दीजिये। (माधुरी से) एक प्रार्थना करूँ तो बुरा न मानिये। (माधुरी सप्रश्न टगर को

देखती है।) मैं चाहती हूँ कि उस अवसर पर आप अपनी कविताएँ भी सुनायें।

माधुरी अवश्य सुनाऊँगी।

टगर यह हुई बात। अच्छा, आप लोग बातें कीजिये।

शेखर नहीं, हम लोग अब आज्ञा लेंगे। आओ, माधुरी! क्यों, चलें न, पुरी साहब? (नाज़िम से) अच्छा, नाजिम साहब, नमस्कार।

नाज़िम तो आप लोग जायेंगे ही। अच्छा है, आराम कीजिये। इस रेगिस्तान में दिन के समय आराम ही किया जा सकता है। अच्छा!

[सब लोग हाथ मिलाते हैं। शेखर टगर की ओर देखकर झिझकता है। टगर हाथ जोड़कर मुसकरा पड़ती है। सब लोग चले जाते हैं।]

नाज़िम (किंचित कठोर) तो ये हैं शेखर। देखने में तो अच्छे-खासे भले आदमी मालूम होते हैं लेकिन मैं इनकी आँखों में पढ़ सकता हूँ कि ये क्या हैं?

टगर तुम्हें ईर्ष्या होती है?

नाज़िम (हतप्रभ होकर) ईर्ष्या, इस लेखक से, जो एकदम शैतान है?

टगर तुम्हें सचमुच ईर्ष्या हो रही है घोर ईर्ष्या। लेखक के रूप में शेखर सचमुच महान है।

नाज़िम (अल्प विराम। किंचित कठोर स्वर) क्या मैं यह समझूँ कि तुम्हारे मन में अब भी उसके लिए आदर है?

टगर यदि मैं कहूँ, है, तो?

नाज़िम (चीखकर) तो मैं विश्वास नहीं करूँगा, कभी नहीं करूँगा, कभी नहीं करूँगा। ऐसा नहीं हो सकता।

यदि ऐसा है तो ।

टगर तो ?

नाज़िम (सहसा करुण होकर) मैं इसका जवाब नही दे सकता। देना भी नही चाहता। टगर, मै जानता हूँ कि तुम्हारा उससे अब कोई सम्बन्ध नही है। तुम उसे ज़रा भी प्यार नही करती। कहो, तुम उसे प्यार नही करती। (टगर स्थिर खडी है।) कहो टगर, कहो। तुम बोलती क्यो नही ? तो क्या मै समझूँ ?

टगर तुम्हे आवेश मे नही आना चाहिए। कोई भी कुछ भी समझने को स्वतन्त्र होता है। मैं नही जानती कि मैं उसे प्यार करती हूँ या नही करती, लेकिन इतना अवश्य जानती हूँ कि जब कोई मेरे सामने उसकी निंदा करता है तो मैं परेशान हो उठती हूँ। उसकी निंदा करने का अधिकार मुझे है, केवल मुझे। मैंने ही तो सहा है।

[कहते कहते फूट पडती है और आवेश मे अन्दर भागी चली जाती है। नाज़िम हतप्रभ सा उसके पीछे जाने को होता है। फिर रुक जाता है, व्यग्र होकर इधर-उधर घूमता है। कुर्सियो को ज़ोर से मेज के अन्दर खिसकाता है। जो कुछ सामने आता है उसे फेंक देता है।]

नाज़िम तो वह अब भी शेखर को प्यार करती है ! अब भी !

[उसी क्षण टगर अन्दर से आती है। वह पूर्णतया शांत है। नाज़िम के पास आकर उसका हाथ अपने हाथ मे ले

लेती है।]

टगर मुझे दुख है कि मैं उत्तेजित हो गयी। आखिर यह दुर्बलता एकदम तो दूर नही हो सकती, मुझे क्षमा कर दो। आओ, अदर चलें।

नाजिम (एक क्षण टगर को देखता है। दोनों की दृष्टि मिलती है। फिर वह टगर को अपनी ओर खींचता, फुसफुसाता है।) गलती मेरी ही थी। माफी मुझे ही मागनी चाहिए।

टगर हम दोनो ने माग ली। हम दोनो ने एक दूसरे को क्षमा कर दिया।

[दोनो हँस पड़ते है। कई क्षण इसी तरह भावावेग मे खडे रहते है। धीरे धीरे प्रकाश धुधलाने लगता है। दोनो उसी तरह निश्चल, मौन, सुदूर मे खोये हुए, एक दूसरे को देखते रहते हैं। सहसा अधकार उनको ग्रस लेता है। दो क्षण के बाद जब फिर प्रकाश होता है तो वही पहले अक वाला स्थान है। वही स्थिति। मच पर केवल टगर है। वह गम्भीर है जसे दर्शकों से कुछ कहना चाहती है।]

कैसे हो जाता है वह सब जिसकी हमने कभी कल्पना भी नही की होती। कैसे घट जाता है वह अघटनीय जिस पर आज भी विश्वास नही होता। कहा वह भोली-भाली बुद्धू सी रश्मिप्रभा, कहाँ यह टगर—जितनी निर्भीक, उतनी ही निदय! क्या यह सच है? क्या मैं वही हूँ, जो कभी थी? क्या मैं जो होने जा रही हूँ, वह भी सच होगा? मैंने वह सब कसे

किया ? कैसे सह पाऊँगी अपने इस अनागत को ?

[सहसा नाजिम का प्रवेश। वह अतिशय उत्तेजित है।]

नाज़िम (टगर के सामने रुककर) टगर, लोगो को यह विश्वास है कि शेखर को मैंने यहा बुलाया है ?

टगर कम से-कम विमला बहन यही कहती है। और विमला बहन के कहने का मतलब है कि सारा कस्बा यही मानता है।

नाजिम मुझे कस्बे से कुछ नही लेना-देना है। वह तो यह भी कहते होगे कि मैंने अपनी पत्नी की हत्या की थी।

टगर कह सकते है। जब मनुष्य किसी के बारे मे अपवाद फैलाने लगता है तो अकुश की चिन्ता नही करता। लेकिन मैं जानती हूँ कि न तुमने शेखर को बुलाया है और न तुमने अपनी पत्नी की हत्या की है।

नाजिम क्योकि कानून ऐसा नही कहता। लेकिन मै तुमसे छिपाना नही चाहता। बहुत-से लोगो का यही विश्वास है कि मेरी पत्नी की अचानक मृत्यु होने का कारण मैं ही था।

टगर (आखो मे झाँककर) तुम्हारा क्या खयाल है ?

नाज़िम अपने खयाल के बारे मे मैं कोई प्रमाण नही दे सकता।

टगर मै प्रमाण नही चाहती, तुम्हारे मुँह से सुनना चाहती हूँ।

[नाजिम सहता कुछ उत्तर नहीं देता। एक क्षण मूर्ति स टगर की ओर देखता रहता है।]

तुम्हे दु ख होता है तो नही पूछूंगी।

नाजिम (एकदम)नही, मैं उत्तर दूगा। उसकी मृत्यु साधारण रूप से हुई थी। कोई भी रहस्य नही था। लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि हम दोनो के मन का मिलन पूर्ण नही हुआ था। यदि इस मिलन का अभाव उसकी मत्यु का कारण बना तो, क्या दोषी मैं ठहराया जाऊँगा ?

टगर इस प्रश्न का उत्तर आसानी से नही दिया जा सकता। देने की जरूरत भी नही है। हमारे मन का मिलन पूण हो गया है ? यह तुम भी कहते हो और मैं भी, पर इस वात की क्या गारण्टी है कि कानूनी कायवाही पूरी होते ही मेरा भूत नही जाग उठेगा ?

नाजिम (अल्प विराम) मैं समझा नही। शायद तुम्हे लोगो की नुक्ताचीनी का खयाल है ?

टगर मैं लोगो को जानती हूँ। वे आपके मुंह पर आपके साहस की प्रशसा करेंगे। पीछे उसी साहस को तोडने को कुछ भी कर गुजरेंगे। विवाह की पार्टी मे आकर आपकी शराब पी जायेंगे और फिर वेहोश होकर आपका घर तोड डालेंगे।

नाजिम तुम ठीक कहती हो, टगर! कस्बे की जिन्दगी की यही विशेषता है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि मैं दिल्ली चला जाऊँगा। वहा भीड मे कौन किसकी सँभाल करता है ? तुम्हे खुशी होगी कि मेरे तबादले की वात लगभग पूरी हो गयी है। (द्वार पर आहट होती है।) कौन है ? आ सकते हो।

[मेजर पुरी का प्रवेश]

पुरी नमस्कार नाजिम साहब, रजिस्ट्रेशन का प्रबन्ध हो

गया है। सब गवाह भी समय पर पहुँच जायेंगे। आप कितने बजे चलना चाहेंगे?

नाज़िम धन्यवाद! अब से कोई दो घंटे बाद।

पुरी बहुत खूब! (जाने को मुडता है लेकिन झिझकता है।) क्षमा कीजिये, वे लोग नही मानेऔर उन्होने शालीमार होटल मे पार्टी का सब प्रबन्ध कर लिया है।

नाजिम नही, यह नही होगा! यह मेरा निजी मामला है। किसी तरह का शोर और दिखावा करने की जरूरत नही है।

पुरी मैं उनसे कह दूगा। कुछ लोग तो अभी आपसे मिलने के लिए बाहर बैठे हुए हं।

नाजिम मै आज किसी से मिलना नही चाहता। उनसे कह दीजिये, और किसी दिन आये।

पुरी जी, कह दूगा। (जाने को मुडता है।)

नाजिम ठहरिये। कोई आवश्यक सरकारी काम तो नही है।

पुरी आप चिन्ता न कीजिये, होगा तो देख लिया जायेगा।

नाजिम नही, मैं दो मिनट मे उनको निबटाये देता हूँ। आप यही ठहरे।

[नाजिम तेजी से बाहर चले जाते हैं। पुरी हतप्रभ खडे रहते हैं। टगर जो अब तक मौन थी, पुरी की ओर देखकर मुसकराती है।]

टगर बैठिए पुरी सहब, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।

पुरी (बठने हुए) जी।

टगर क्या कस्बे मे हमारे बारे मे बहुत चर्चा है?

पुरी यह तो स्वाभाविक है।

टगर जो स्वाभाविक है, क्या वह उचित भी है?

पुरी हम सैनिक लोग उचित-अनुचित की उतनी चिन्ता नहीं करते जितनी कानून की।

टगर आपके कहने का मतलब क्या यह नहीं है कि कानून भी अनुचित हो सकता है ?

पुरी (घबराकर) मैंने यह तो नहीं कहा।

टगर आपने यह नहीं कहा, लेकिन जो कुछ कहा है उसका अर्थ यही है। हर शब्द का अर्थ वही नहीं होता जो बताया जाता है।

पुरी मैं ये सब बातें नहीं जानता। यह भाषा से उलझना

टगर (हँसकर) पुरी साहब, नारी का स्वभाव ही उलझना और उलझाना है।

पुरी आज आप ये कैसी बातें कर रही हैं ? बुरा न मानिये, मैं कुछ समझ न सका।

टगर (निश्वास) यही तो मुसीबत है। मुझे कभी कोई नहीं समझ सका। असल में मैंने समझने ही नहीं दिया। मैंने सुना है कि शेखर अभी यहीं हैं। क्या वे यहाँ स्वयं रुके हैं या उन्हें रोका गया है ?

पुरी क्षमा करें, यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर न दूँ तो ?

टगर (हँसकर) उत्तर तो आप दे चुके। आप आसानी से 'न' कह सकते थे। (पुरी अचरज से टगर की ओर देखता है।) लेकिन नहीं कह सके। इसलिए नहीं कह सके क्योंकि शेखर को जान-बूझकर रोका गया है जैसे जान-बूझकर बुलाया गया था। मुझे बदनाम करने के लिए। नहीं क्या ? बोलिए (पुरी बेहद परेशान हैं लेकिन टगर उन पर से दृष्टि नहीं हटाती। मन्त्रमुग्ध-से जैसे वे उत्तर देने को विवश होते हैं।)

पुरी (अल्प विराम) जी हाँ, आप सच कहती है।

[टगर मुसकराती है। तभी एक वृद्ध सरदारजी के साथ नाजिम आते हैं।]

नाजिम टगर! सरदार वरियामसिंह जी माने ही नहीं। तुम्हे बेटी मानते हैं न। कहने लगे, मिलकर ही आशीर्वाद दूंगा बेटी को।

[टगर आगे बढ़कर पर छूती है।]

सरदारजी (सिर पर हाथ रखते ह।) बेटी, मुझे जरूरी काम से जाना है। वाह गुरु तुम पर कृपा करे। हमारे धन्य भाग जो तुम जैसी बहादुर बेटी यहाँ आयी। (दरी आगे बढ़ाकर) यह दरी तुम्हारी काकी ने अपने हाथ से बुनी है तुम्हारे लिए।

टगर (भावुक होकर) काकाजी, बड़ी सुन्दर दरी है पर

सरदारजी (टोककर) बेटी को मना करने का हक नही होता, रख लो।

टगर मुझे तो आपका और काकी का आशीर्वाद चाहिए।

सरदारजी वही तो देने आया हूँ। कस्बे के लोग तुम्हारे बारे मे न जाने क्या-क्या कहते है पर मैं जानता हूँ तुम क्या हो?

टगर (अल्प विराम) काकाजी! कभी आपके पास जाऊँ तो आपके घर का दरवाजा खुला मिलेगा न?

सरदारजी (अल्प विराम) बेटी के लिए मैके का दरवाज़ा एक दिन बन्द हो जाता है तो फिर नही खुलता। यह रिवाज़ है। (अल्प विराम) पर रिवाज तोड़े भी तो जाते है।

[नाज़िम और पुरी चकित से देखते हैं।

टगर फिर पर छूती है। सरदारजी 'वाह गुरु' 'वाह गुरु' करते हुए चले जाते हैं। दो क्षण सब स्तब्ध रहते हैं फिर नाज़िम साहब बोलते हैं।]

नाज़िम बाहर बहुत लोग थे। उन्होंने मुझे बधाइयां दीं, लेकिन मुझे लगा जैसे वे मेरी निन्दा कर रहे हैं।

टगर यह आपके मन का भय है।

पुरी (सहसा) जी, तो मैं चलूं ?

नाज़िम हां, आप जा सकते हैं।

पुरी जी, नमस्कार।

[पुरी के जाने के बाद दोनों एक दूसरे को देखते रहते हैं। फिर नाज़िम आगे बढ़कर टगर का हाथ अपने हाथ मे लेकर सहलाते हैं।]

नाज़िम टगर, तुमने अभी कहा कि यह मेरे मन का भय है। यह भय है क्या ?

टगर तुम जानते हो।

नाज़िम हम मुक्त क्यों नहीं हैं ?

टगर यह भी तुम जानते हो।

नाज़िम तुम मुझे छोडकर चले जाने की कल्पना तो नहीं कर रही ?

टगर तुम यह सब मुझसे क्यों पूछ रहे हो, जबकि तुम सब कुछ जानते हो ? (तेज होकर) तुम डरते हो ?

नाज़िम किससे ?

टगर मेरे और अपने दोनों के भूत से।

[एक क्षण फिर दोनों एक दूसरे को टटोलते हैं। फिर नाज़िम आगे बढ़कर

[आवेश मे टगर का हाथ पकडकर चूम लेने ह ।]

नाजिम जब नही डरूँगा । मैं तुम्हे अपने मे समेट लूगा ।

टगर तुम ऐसा नही कर सकते ।

नाजिम क्यो ?

टगर क्योकि मेरे और तुम्हारे बीच भूतकाल की जो दीवार खडी है। सारा ससार उस दीवार को मजबूत करने मे लगा हुआ है। हम दोनो भी उसे गिराने मे समर्थ नही हो पा रहे हैं।

[नाजिम निरुत्तर टगरको देखे जाता है।]

तुम्हे जवाब नही सूझ रहा, क्योकि यह सत्य है।

नाजिम (परेशान) मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा।

टगर आ भी कैसे सकता है ? भीतर के मन पर धुध छायी हुई है और यह बाहरी जीवन उसको हटाने मे असमर्थ है। हम केवल समाज से नही डरते, अपने से भी डरते हैं। बल्कि मैं कहूँगी कि हम अपने से ही डरते हैं।

नाजिम टगर, मैं पागल हो जाऊँगा। तुम अब कुछ मत कहो। जो हो रहा है, होने दो। उठो, हमे तयार भी होना है। तुम्हारी साडी, गहने क्या एक बार पहनकर नही दिखाओगी ? प्लीज, उठो ! विमला बहन आती ही होगी। (द्वार पर आहट होती है।) लो, वे आ गयी। (द्वार की ओर देखकर) आ जाओ, विमला बहन !

[शेखर का प्रवेश]

(चकित) आप ! इस वक्त, यहा !

शेखर वेवक्त आने के लिए क्षमा चाहता हूँ। मेजर साहब के कहने से ही मैं रुका था पर अब वे कहते है कि मुझे जाना होगा। मेरे साथ यह छल क्यो हुआ, जानता हूँ। फिर भी यह अवसर नही है उन बातो का। जाने से पहले शुभकामनाएँ देने आया हूँ।

नाजिम (काष्ठवत) शुक्रिया!

टगर माधुरी चली गयी?

शेखर वह नही रुकी। शायद नाराज़ हो गयी। लेकिन आपका इन बातों से क्या सम्बन्ध? मैं भी जा रहा हूँ। नमस्कार!

[वह मुडता है। टगर तेजी से आगे बढती है।]

टगर सुनो, शेखर!

[सहसा नाजिम आगे आ जाता है। टगर उसे बचाकर आगे बढ जाती है और द्वार पर शेखर को रोक लेती है।]

सुनो, शेखर!

शेखर (देखता है।)

टगर डरो नही, रोकने नही आयी। केवल एक बात पूछती हूँ, तुम्हे किसने आमन्त्रित किया था? (एक क्षण दृष्टि मिलती है। दोनो तोलते ह। फिर शेखर अपन को तोलकर आगे बढ जाता है। फिर मुडता है।)

शेखर (जाते जाते) डॉक्टर साहब और उनकी पत्नी ने।

[शेखर लौटकर नहीं देखता। टगर मुडकर नाजिम के पास आती है।]

नाजिम तुम्हे उसके पीछे नही जाना चाहिए था। वह शैतान है। एक के बाद एक नारी का लुभाना और छोडना

उसका पेशा है। क्या आज के साहित्यकारो का यही ?

टगर साहित्यकारो की बात छोड दीजिए। पहले मैंने भी यही सोचा था। तभी तो प्रतिहिंसा की आग भभक उठी थी। मैने उसकी हत्या करने का विचार किया था। सोचा था, पुरुष जाति से बदला लूंगी। उसने मुझे एक बार छोडा है, मैं बार-बार पुरुषो को छोड़ूंगी। एक के बाद एक जो मैं इन भ्रष्टाचारियो को फँसाती चली गयी, वह मात्र सयोग नही था, नाजिम साहब !

नाजिम (व्यग्र होकर) टगर ! मैं फिर कहता हूँ, अब कुछ मत कहो। अब कुछ ही घटो मे हम एक हो जायेगे।

टगर इसीलिए तो कह रही हूँ कि एक होने से पहले हम अपने को शुद्ध कर ले। मैंने इसीलिए ठाकुर साहब को अपने जाल मे फँसाया था। मेरा विचार जासूसी करना नही था, पर करनी पडी। मुझे खुशी हुई क्योकि आसानी से पुरुष से बदला लेने का अवसर मिल गया। मै माथुर साहब की ओर भी इसीलिए खिची। मेरे लिए वह माथुर नही था, केवल पुरुष था। शेखर का ही एक रूप !

नाजिम (बेहद परेशान होकर) टगर ! मैं सब कुछ जानता हूँ

टगर (पूर्ववत) तुम नही जानते। (अल्प विराम) माथुर साहब की गिरफ्तारी के बाद मुझे लगा कि मैं अपने ही बिछाये जाल मे फँस गयी हूँ। यह खेल मात्र एक दम्भ है, एक छल। नही, यह खेल मैं अब और न खेल सकूगी।

नाज़िम- जरूरत भी नही है। मैं तुम्हारी व्यथा को समझता हूँ। अब मैं सदा-सदा के लिए तुम्हे उस व्यथा से मुक्त कर दूगा। तुम्हे अपना बना लूगा।

टगर कह चुकी हूँ, तुम ऐसा नही कर सकोगे। अभी मैं तुम्हारी प्रेमिका हूँ लेकिन जब तुम कानून की दृष्टि से मेरे पति हो जाओगे तो तुम बदल जाओगे। तुम स्वामी, भर्त्ता, परमेश्वर न जाने क्या-क्या रूप धारण कर लोगे। तब क्या तुम्हे बार-बार मेरा भूत याद नही आयेगा ? तुम कुरेद-कुरेदकर मेरे आत्म समर्पण की बात नही पूछोगे ? नही पूछोगे कि क्या मेरा कोई और प्रेमी भी था ? (एक गहन मौन) तुम मौन हो। इसीलिए कहती हूँ, मुझे मुक्ति दो, मुझे जाने दो मैं अभी सोच सकती हूँ। अभी मेरे पैर लडखडाये नही है।

नाज़िम (उठने लगता है।) नही, यह नही हो सकता।

टगर यही होगा। तुम भी यही सोचते हो। तुम्हारे साथ रहकर मैंने यही जाना है कि हम अब और अधिक अपने को न छले। उस दिन मैंने स्पष्ट नही कहा था लेकिन आज कहती हूँ कि मैं शेखर को निरतर प्यार करती रही हू। मेरा यह प्यार ही तो मुझसे यह सब कुछ कराता रहा है। ठाकुर और माथुर सब उसी प्रेम की सृष्टि हैं।

नाज़िम (तेजी से रुककर) यह नही सोचा था यह सोचा ही नही था

टगर (पूर्ववत) लेकिन तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो कि मैंने मन प्राण से तुम्हारा होने की चेष्टा की है। तुम्हे सचमुच प्यार किया है। तभी तो यह सब कह

सकी हूँ। कह सकी हूँ कि शेखर को मन से नहीं निकाल पायी। उसे पा सकूंगी, यह आशा मैं नहीं करती पर इतने खेल खेलकर अब किसी और की होने की आशा भी मुझ नहीं है।(गहन मौन) भूतकाल बीत जाता है, पर मिटता नहीं।

नाजिम (शून्यवत् मौन रहता है।)

टगर बोलो, अब भी मुझे रोकना चाहोगे? (गहन मौन) जवाब दो! तुम मौन हो। तुम अपने से संघर्ष कर रहे हो। तुम अपने को छिपाने की राह ढूढ रहे हो।

नाजिम (तीव्र बेचैनी) बस, अब चुप हो जाओ। सब समाप्त हो गया। मैं अब तुम्हें रोकने की चेष्टा नहीं करूँगा। लेकिन

[तेजी से टगर की ओर बढ़ता है। वह एक क्षण कांपती है, लेकिन दूसरे ही क्षण नाजिम की आंखों में झांकती है। वह ठिठक जाता है।]

(लौटते हुए)नहीं, तुम जाओ। तुम सच कह रही हो।

[टगर एकाएक टूटकर नाजिम की ओर झुकती है पर बीच में ही मुड़ती है और द्वार की ओर बढ़ती है। पर उसके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही द्वार खुलता है। विमला, पुरी साहब, डॉक्टर, सेठ रामनाथ तथा अन्य तीन चार व्यक्ति प्रवेश करते हैं और बोलना शुरू कर देते हैं।]

विमला माफ करना, मुझे देर हो गई। पर तुम्हें सँवारने देर ही कितनी लगती है! तुम तो

डॉक्टर हमने भी सोचा, कि आपके साथ ही चलेंगे।

पुरो सेठजी माने ही नही। कहने लगे कि कस्बे के लोग

सेठ रामनाथ जी हा, कस्बे मे वर के साथ बारात का आना जरूरी है। बाहर सब खडे हैं, आप जल्दी से तैयार हो जाइये।

[एक के बाद एक बोल चुकते ह तो पाते ह कि नाजिम पूववत खडे ह और टगर बाहर जा रही है।]

नाजिम दोस्तो! मुझे क्षमा कर दो, यह शादी नही होगी। टगर ने सदा के लिए यह स्थान छोडने का निश्चय कर लिया है।

सब (एक साथ विमूढ से) क्या!

सब चित्रलिखित से पिटे पिटे से खडे रहते ह। परदा धीरे धीरे गिरने लगता है। टगर तब तक मच से बाहर हो जाती है। सब नाजिम को घेर लेते ह जसे बधाई दे रहे हों, पर दृष्टि मिलते ही सिर झुका लेते ह।]

• •